Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

वुसिते विगयगिद्धी य,
आयाणं सारक्खए।

संयमी व्यक्ति धर्म में स्थित रहे। वह किसी भी इंद्रिय-विषय में आसक्त न बने और आत्मा का संरक्षण करे।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 20 • 21 - 27 फरवरी, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 19-02-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

158वें वृहद् मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन

एक विधान एक प्रधान है तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान: आचार्यश्री महाश्रमण

- महामहिम आचार्यश्री महाश्रमणजी ने धर्मसंघ के नाम दिया मंगल संदेश
- साधु-साध्वियों एवं समणियों के आगामी चातुर्मासों की करी घोषणा
- वृहद मर्यादा महोत्सव में 432 चारित्रात्माओं ने पंक्तिबद्ध होकर किया हाजरी का वाचन
- छापर चातुर्मास में आयोजित होंगे दो दीक्षा समारोह

बीदासर, ७ फरवरी, २०२२

माघ शुक्ला सप्तमी वि०सं० १९२१ को बालोतरा में प्रज्ञा पुरुष श्रीमद्जयाचार्य ने आचार्यश्री भिक्षु के अंतिम लिखत मर्यादा पत्र के आधार पर ही मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ किया था। आज १५८वाँ मर्यादा महोत्सव जो बीदासर का रजत महोत्सव है, तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता के पावन सान्निध्य में आयोजित हो रहा है, जिसे पूज्यप्रवर ने वृहद् मर्यादा महोत्सव से उपमित किया है।

आचार्य भिक्षु के परंपर पट्टधर, महातपस्वी, शांतिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल स्मरण से मर्यादा महोत्सव समारोह का त्रिदिवसीय समारोह के मुख्य दिवस का कार्यक्रम शुरू हुआ। महामहिम आचार्यप्रवर ने फरमाया कि वीर पुरुष महान पथ के प्रति प्रणत समर्पित हो जाते हैं।

दुनिया में दो प्रकार के मार्ग हैं–अध्यात्म का मार्ग और दूसरा भौतिकता का मार्ग। दोनों रास्ते अलग-अलग हैं। पूर्व और पश्चिम में जैसे अंतर होता है, वैसे ही इन दोनों के मार्ग में अंतर होता है। हम लोगों ने भौतिकता के मार्ग को अब स्वीकार नहीं कर रखा है। हमने अध्यात्म के पथ को व्यावहारिक रूप में स्वीकार किया है।

हमने जैन शासन के माध्यम से अध्यात्म के पथ पर चलना स्वीकार किया है। जैन शासन में भी हमने भैक्षव शासन जैन श्वेतांबर तेरापंथ शासन को अपने उस अध्यात्म मार्ग का एक सहायक तत्त्व और माध्यम बनाया है।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ शासन का प्रारंभ आज से लगभग २६२ वर्ष पूर्व हुआ था। हमारे इस संघ संप्रदाय के प्रवर्तक प्रथम अनुशास्ता, प्रथम आचार्य, प्रथम गुरु परमपूज्य भिक्षु स्वामी थे। उन्होंने हमारे धर्मसंघ में मर्यादाएँ बनाई। उनकी मर्यादाओं में एक मर्यादा पत्र है–वि०सं० १८५९ माघ शुक्ला सप्तमी का। वह पत्र और उस पत्र की भावना-मर्यादाएँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। यह पत्र अध्यात्म की चेतना संगठन की चेतना का निर्देश देने वाला है। (पूज्यप्रवर द्वारा पत्र दिखाया गया) २१९ वर्ष पुराना यह पत्र है।

आज हम मर्यादा महोत्सव का मुख्य समारोह आयोजित कर रहे हैं। आयोजन का मुख्य आधार मैं इस पत्र को मानता हूँ। हमारे धर्मसंघ के जनक परमपूज्य भिक्षु थे। उनका उपकार मानें कि हमें ऐसा धर्मसंघ प्राप्त हुआ है। ये हमारा सौभाग्य है।

मर्यादा महोत्सव का प्रारंभ करने वाले प्रज्ञा पुरुष श्रीमद् जयाचार्य थे। आज १५८वें वर्ष का मर्यादा महोत्सव है। अतीत में दस आचार्य हुए हैं। मैं पूर्वाचार्यों के प्रति प्रणत हूँ। वंदन करता हूँ। किस प्रकार से भैक्षव शासन की उन्होंने सेवा की है। वर्तमान में भी परंपरा चल रही है।

हम चारित्रात्माएँ इस धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं। हमने अध्यात्म का मार्ग स्वीकार किया है। तो हमारे मन में अध्यात्म निष्ठा पुष्ट रहनी चाहिए। आत्मा का कल्याण करने के लिए हमने अभिनिष्क्रमण किया है। 'मर पूरा देरयां, आत्मा रा कारज सारस्यां' ऐसे वाक्य हमें प्रेरणा देते रहें। प्राणों की परवाह नहीं है, प्रण को अटल निभाएँगे। यह पंक्ति यदा-कदा हमारे मस्तिष्क में स्मृति में आ जाए। हमारा आदर्श है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 - 27 फरवरी, 2022

✦ *तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

स्वाध्याय से ज्ञान और वैराग्य की वृद्धि हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, ८ फरवरी, २०२२

जैन जगत की महान विभूति आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम वाङ्मय एक उच्च कोटि का साहित्य हमारे लिए है। साहित्य ज्ञानवर्धक भी होता है। ज्ञान के बिना अंधकार हो जाता है। ज्ञान का माध्यम साहित्य बनता है।

पढ़ने से ज्ञान प्राप्ति हो सकती है। ज्ञान अपने आपमें शुद्ध-पवित्र तत्त्व है। बाद में ज्ञान का उपयोग आदमी क्या करता है? वो अशुद्ध या शुद्ध हो सकता है। ज्ञान के लिए हमे उसके अर्जन का प्रयास करना चाहिए। दुनिया में साहित्य इतना है कि सारा साहित्य पढ़ पाना भी मुश्किल है। ज्ञान का कोई ओर-छोर नहीं है। हमारे धर्मसंघ का कितना साहित्य भरा पड़ा है।

ज्ञान भी आकाश के समान अनंत है। केवल ज्ञान तो वर्तमान में असंभव है। मति, श्रुत या अवधिज्ञान हो सकता है। अतीन्द्रिय ज्ञान हो सकता है। मति-श्रुत ज्ञान भी उच्च स्तर के हो सकते हैं। आचार्य तुलसी में कितना ज्ञान था। कितने हजार गाथाओं को कंठस्थ किया था। वे विशेष महापुरुष थे। सुंदर हमारा ज्ञान और साधना होनी चाहिए। गुरुदेव महाप्रज्ञ जी ने फरमाया है—कानो की छटा निराली, आँखें इमरत की प्याली। किसने सौंदर्य सजाया रे, महाप्राण गुरुदेव।

चेहरे की सुंदरता से भी ज्ञान की सुंदरता का अधिक महत्त्व है। यह एक

प्रसंग से समझाया। गुरुदेव महाप्रज्ञजी में भी कितना ज्ञान था। मति श्रुतज्ञान में तारतम्य रह सकता है। दसवेंआलियं बड़ा महत्त्वपूर्ण आगम है। यह प्रायः सभी को कंठस्थ हो। उत्तराध्ययन भी याद करने का प्रयास हो। दीक्षा पर्याय के २५ वर्ष से ज्यादा हो गए तो आगम कितने पढ़ें? आगम पढ़ते रहें। पढ़ते-पढ़ते ज्ञान भी बढ़ता है।

आगम के स्वाध्याय से हमारे संयम के पर्यव भी निर्मलता को प्राप्त हो सकते हैं। स्वाध्याय से ज्ञानवृद्धि और वैराग्य वृद्धि दोनों हो सकती है। लिखने वाले लिखते भी हैं। आचार्य भिक्षु व जयाचार्य के साहित्य को देखें, कितना ज्ञान भरा हुआ है। आचार्य भिक्षु के साहित्य तेरापंथ का शास्त्र है। उच्च कोटि का साहित्य है।

शास्त्रकार ने दो श्लोकों में एक संदेश दिया है कि कैसे एक लड़के ने मूल पूँजी जो पिता ने सौंपी उसे भी गँवा दी। दूसरे बेटे ने मूल पूँजी की सुरक्षा की। तीसरे बेटे ने मूल पूँजी से धन को खूब कमा लिया। जिसने कमायी की वो सेठ को सबसे प्यारा बेटा लगेगा। हम सब जिनेश्वर भगवान के बेटे हैं। एक मनुष्य ऐसा है, जो इतना धर्म-ध्यान करता है कि मृत्यु के बाद देव गति या मोक्ष में चला जाए। एक मनुष्य न धर्म करता न पाप करता, मरकर वापस मनुष्य गति में आ गया। एक ऐसा आदमी जो पाप खूब करता है, जो मरकर नरक या तिर्यंच गति में पैदा होता है। मनुष्य जन्म मूल पूँजी है।

यह श्लोक द्वि आत्मचिंतन-आत्मावलोकन की सामग्री प्रस्तुत करने वाली है। हम यह सोचें कि मैं कैसा हूँ। कौन से बेटे के समान हूँ। दुनिया में ऐसे लोग भी हैं, जो पाप-कर्म करके नरक में पैदा हो जाते हैं या तिर्यंच योनि में चले जाते हैं। वे मूल पूँजी खो देते हैं।

सम्यक् दृष्टि होता है, उस स्थिति में आयुष्य बंध आदमी करता है तो न नरक में जाएगा न तिर्यंच में जाएगा, मरकर न वापस मनुष्य बनेगा, देवों में भी न भवनपति, न व्यंतर, न ज्योतिष्क केवल वैमानिक देवगति में जाकर ही पैदा होगा। सम्यक्त्वी होने का भी बड़ा लाभ होता है।

मूल लाभ तो है कि आत्मा का कल्याण होता है। सम्यक्त्वी है, तो न स्त्री वेद का बंध न नपुंसक वेद का बंध वह तो पुरुष वेद में ही पैदा होगा। हम यह चिंतन-मनन करते रहें कि मेरा ज्ञान कैसे बढ़े? ज्ञान का उपयोग मैं अच्छा करूँ। अध्यात्म का ज्ञान है, शास्त्रों का ज्ञान है, व्यावहारिक कल्याण का ज्ञान है, प्रवचन आदि में उसका अच्छा उपयोग करते रहें, तो हमारा ज्ञान स्व-पर कल्याण कर सकता है। इस प्रकार का ज्ञान हमारे द्वारा अर्जित होता रहे, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी सुमनश्रीजी, बीदासर, साध्वी विमलप्रभाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पारस गोलछा ने गीत की प्रस्तुति दी।

शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने श्रावक समाज को विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने तीन धर्म दान—ज्ञानदान, अभयदान और संयति दान के बारे में विस्तार से समझाया।

मोक्ष प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ना ही जीवन का लक्ष्य हो : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, १० फरवरी, २०२२

धर्मोपदेशक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने वीरभूमि, बीदासर में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धार्मिक जगत में मोक्ष-निर्वाण का बहुत ही महत्त्व है। प्रश्न आता है कि जीवन क्यों जीएँ? लक्ष्य उद्देश्य क्या होना चाहिए, जीवन जीने का? जीवन का लक्ष्य होना चाहिए—मोक्ष प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ना। भौतिक लक्ष्य यदि पैसा कमाना है, तो वो इस जीवन तक साथ रह सकता है, वो तो आगे जाने वाला नहीं।

और भी भौतिक लक्ष्य हो सकते हैं, पर वे सब नश्वर हैं, उनका लक्ष्य इस जीवन तक ही है, कोई बड़ा लक्ष्य नहीं है। मोक्ष ऐसी चीज है कि वो मिल जाएँ, फिर वापस कभी वो नष्ट नहीं होता, हमेशा वहाँ रह सकते हैं। क्या इस जीवन के बाद मोक्ष मिल जाएगा? यह तो कठिन है। मोक्ष के निकट हो सकते हैं। जन्म सीमित हो गए ये भी बड़ी बात है।

इस जीवन की साधना से मोक्ष के निकट हो सकेंगे, फिर अगले जन्म में और साधना कर सकते हैं। मोक्ष के लिए अनेक जन्मों में साधना करनी पड़ सकती है। हम भगवान महावीर के पूर्व भवों को देखें। कितने जन्मों तक साधना की। आखिर वर्धमान के भव में साधना कर मोक्ष पधारे।

मोक्ष सही साधना से मिलता है। साध्य, साधन, साधना, साधु और सिद्धि ये पाँच शब्द हैं। छठा शब्द है, सिद्ध। साध्य मोक्ष है, साधन है—सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र। साधना-साधन है, इनकी आराधना करो। जो ये साधना के करे वो जीव आदमी साधु है। सम्यग् साध्य की सम्यग् साधना करने से सिद्धि प्राप्त हो सकेगी। जिसको सिद्धि मिल जाएगी वो सिद्ध हो जाएगा।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

ज्ञान रूपी आत्मा और अनुभव रूपी शरीर व्याख्यान के दो अंग होते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, ६ फरवरी, २०२२

धर्मज्ञाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान का महत्त्व है। ज्ञान प्राप्ति के लिए विद्याभ्यास करना होता है। कोई ज्ञान देने वाला भी अच्छा मिल जाए और ज्ञान लेने वाला भी अच्छा मिल जाए, सहायक साधन-सामग्री भी अच्छी मिल जाए तो आदमी विद्या के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है।

ज्ञान लेने वाले विद्यार्थी में उसके लायक योग्यता हो तो वह ज्ञान प्राप्ति में पुरुषार्थ कर सकता है और प्राप्त कर सकता है। ज्ञान देने वाला भी अपने विषय को अच्छा वेत्ता-अधिकृत हो और ज्ञान देने का प्रयास हो। साधन सामग्री रूप में पुस्तकें भी उपलब्ध हो। मुनि जीतमल जी को मुनि हेमराज जी स्वामी जैसे गुरु मिले थे।

विद्यार्थी में ज्ञान प्राप्ति में पुरुषार्थ के साथ प्रतिभा भी अच्छी हो। साथ में भावात्मक शुद्धि भी चाहिए। शास्त्रकार ने बताया है कि पाँच ऐसे कारण हैं जिनसे आदमी शिक्षा को प्राप्त नहीं करता। पहला कारण है—अहंकार। ज्ञान और ज्ञानदाता के प्रति निरहंकारता हो।

दूसरी बात है—क्रोध। मन शांत रहता है, तो अच्छा एकाग्र हो सकता है। तीसरी बाधा प्रमाद है। व्याकरण एक अलूणी शिक्षा है। साहित्य में तो स्वाद आ सकता है। व्याकरण के बिना आदमी अंधा है। जिज्ञासा ज्ञान की जननी है।

चौथी बाधा है—रोग, बीमारी। शरीर की स्वस्थता भी अपेक्षित होती है, ज्ञान प्राप्त करने के लिए। पाँचवीं बाधा है—आलस्य, पुरुषार्थ का अभाव। इतिहास को पढ़ें। संस्कृत-प्राकृत भाषा का अर्थ भी सीखें। आगम के अनुवाद-टिप्पण पढ़ने से कई जानकारियाँ मिल सकती हैं। नवदीक्षित दत्त-चित्तता से स्वाध्याय कर सीखने का प्रयास करें।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

एक विधान एक प्रधान है तेरापंथ धर्मसंघ की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हमारा धर्मसंघ न तो राजनैतिक दल है, न कोई मूलतः सामाजिक संगठन है। हमारा धर्मसंघ मूल में आध्यात्मिक-धार्मिक संगठन है। हमारे में संघ-निष्ठा भी रहनी चाहिए। संघ मेरा है। जितनी हो सके इस संघ की सेवा करें। संघ हमारा उपकारी है। शासन हमारा आसरा है। हमारी सार-संभाल करने वाला यह संघ है। संघ के प्रति श्रद्धा-निष्ठा का भाव हमारे में बना रहे।

हमारे धर्मसंघ में आचार्यश्री भिक्षु एवं उत्तरवर्ती आचार्यों ने जो मर्यादाएँ बनाई हैं, वो भी कई-कई तो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। हमारे धर्मसंघ की मर्यादाओं में एक शिरोमणी मर्यादा है—सर्व साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें। सबसे बड़ी और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संगठन की दृष्टि से है। विहार-चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें। यह निष्ठा बहुलांश में है।

साधु-साध्वियों में संघ के प्रति निष्ठा है, परस्पर सौहार्द भाव है। मुझे सौहार्द भाव वर्धमान लग रहा है। कोई साधु-साध्वी अपना शिष्य-शिष्या न बनाएँ। यह हमारे धर्मसंघ की खूबी है। शिष्य-शिष्याएँ एक आचार्य की हैं। यह हमारे धर्मसंघ की विशेषता है। दीक्षा देना है, आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करे। अयोग्य की संख्या न बढ़े। मुमुक्षु संख्या बढ़े यह काम्य है, अभिष्ट है।

हमारी महत्त्वपूर्ण मर्यादा है कि भावी आचार्य का मनोनयन आचार्य करे, सर्व साधु-साध्वियाँ उस मनोनयन को सहर्ष स्वीकार करें। हमारे धर्मसंघ में मैं देखता हूँ कि आचार्यों को बहुत पावर प्राप्त है। पावरफुल तेरापंथ के आचार्य होते हैं। जिसको उचित समझें उसे उत्तराधिकार सौंपा जा सकता है। साध्वीप्रमुखा बनाना हो या अग्रणी, सारा अधिकार आचार्य का ही होता है।

हमने चारित्र स्वीकार किया है, पाँच महाव्रत—पाँच समिति और तीन गुप्ति की अखंड आराधना करें। ये तेरह नियम हमारा साधुपना है। पाँच महाव्रत पाँच हीरे हैं, जो अमूल्य हीरे हैं। ये जिन्हें प्राप्त होते हैं, वह महान संपदा वाला है।

हमारे धर्मसंघ में आज्ञा का भी बहुत महत्त्व है। महाव्रती है, पर गुरु आज्ञा में रहें। साध्वियाँ प्रमुखाश्रीजी की भी आज्ञा में रहें। संघीय मर्यादाएँ हैं, शास्त्रीय मर्यादाएँ हैं, मर्यादा-निष्ठा चाहिए। मर्यादा बनाने वाले बना सकते हैं। बनाकर लागू करने का घोष भी कर सकते हैं। पालने वाले हो, तब पूरी बात हो सकती है। मर्यादाओं के पालन के प्रति भी हमारी निष्ठा रहे।

हमारे धर्मसंघ में आचार्य अनुशासन भी करते रहे हैं। उलाहना भी देते रहे हैं। आचार्यों के उलाहना को विनयपूर्वक सहन करना चाहिए। हमारे धर्मसंघ में आचार्यों के प्रति विनय का भाव अच्छा है और आगे बढ़ता रहे। सहनशीलता की भावना बढ़ती रहे। हमारे संघ में एकता की बात है। एक आचार, एक विचार, एक आचार्य और एक संविधान। इन चार चीजों में एकता देख रहा हूँ। हमारी श्रद्धा सिद्धांत की एक मान्यता है। हमारी संघीय मान्यता एक ही है।

सबका एक ही आचार्य होता है, एक ही विधान है। एक विधान-एक प्रधान। ऐसा धर्मसंघ हमें प्राप्त हुआ है। आचार्यों के गौरवशाली इतिहास हैं। यहाँ साधु-साध्वियों का भी इतिहास है। तपस्याएँ भी अच्छी होती हैं। ज्ञानाराधना भी अच्छी हो रही है, शिक्षा का भी विकास हुआ है। पर आज भी ज्ञान के विकास की अपेक्षा है। हमारा ज्ञान और गहराई में बैठें।

हमारी चिंतन-शक्ति भी गहरी हो। विकास को अवकाश है। जो हमें मिला हुआ है, वो मर्यादा-अनुशासन, कुछ अंशों में बौद्धिकता और सौहार्द भाव की दृष्टि से हमें अच्छा धर्मसंघ प्राप्त है। समणियाँ भी गृह त्यागिनी हैं, उनकी भी आचार के प्रति जागरूकता रहे। अपना विकास करती रहें।

हमारे धर्मसंघ में श्रावक-श्राविकाएँ भी हैं। मैं देखता हूँ कि श्रावक-श्राविकाएँ भी विशिष्ट हैं। उनमें सेवा-भावना, विनय भावना, अनुशासन निष्ठा, और अपने त्याग संकल्प के प्रति भी जागरूक है। शनिवार की सामायिक की बात को समाज ने गहराई से पकड़ा है, लिया है। सुमंगल साधक भी बन रहे हैं। सुमंगल साधना गृहस्थ जीवन की उच्च कोटि की साधना है। बारह व्रतों से ऊपर की साधना है।

हमारे धर्मसंघ में संस्थाएँ भी अनेक हैं। संस्थाओं को भी मैं देखता हूँ तो अच्छा लगता है। तेरापंथ समाज का कोई ऐसा भाग्य है कि ऐसी संस्थाएँ समाज के पास हैं। समाज के लोगों में उनके प्रति निष्ठा है। ये संस्थाएँ आध्यात्मिक-धार्मिक विकास करती रहें। उनमें आर्थिक शुचिता बनी रहे। इनकी गतिविधियाँ भी अच्छी है। मुझे आत्मतोष हो रहा है।

हमारे यहाँ ज्ञानशालाएँ चलती हैं, अच्छा लगता है। बच्चों के विकास-निर्माण का प्रयास हो रहा है। ज्ञानशालाओं व ज्ञानार्थियों की जितनी संभव हो संख्या बढ़नी चाहिए। बढ़ाने का प्रयास भी होना चाहिए।

उपासक श्रेणी मैं देखता हूँ। उसके लिए भी मैं कुछ अंशों में संतोषानुभूति करता हूँ। उपासक श्रेणी भी कितनी अच्छी श्रेणी है, जगह-जगह जाकर काम कर सकती है। वो भी एक अच्छी विद्या है।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान का भी विकास हो रहा है, कितने मानवोपयोगी कार्य कर रहे हैं। जीवन-विज्ञान भी यथोचित्य कार्य करती रहे। चारित्रात्माएँ भी इन्हें बल देने का प्रयास करते रहें, यह काम्य है।

मर्यादा महोत्सव वार्षिक उत्सव का दिन है। साध्वीप्रमुखाश्री ५० वर्षों से सेवा देती आ रही हैं। कितनी बड़ी सेवा आपकी रही है। कितना श्रम-पुरुषार्थ आपने रखा है। मुझे संतोष है कि आपका पुरुषार्थ देखता हूँ तो १० साल पहले और आज में क्या फर्क है? मेरी मंगलकामना है कि साध्वीप्रमुखाजी का स्वास्थ्य अच्छा रहे। आपकी सक्रियता लंबे काल तक बनी रहे। यह हमारी मंगलकामना है।

हमारे धर्मसंघ में मुख्य नियोजिकाजी, साध्वीवर्या जी भी सेवाएँ दे रही हैं। मुख्य मुनि भी प्रबंधन, प्रशासन व संघीय कार्यों में मैं भी इनसे सहयोग ले लेता हूँ। ये हमारे व्यवस्था तंत्र में महत्ता के साथ जुड़े हुए हैं। बहुश्रुत परिषद भी सात सदस्यों वाली है। मुनि महेंद्र कुमार जी इसके संयोजक हैं। इनसे भी चिंतन-सुझाव मिलते रहते हैं।

हमारे साधु-साध्वियाँ, न्यूरोपियन फोर्ट का सेवन न करें। श्रावक-श्राविकाएँ भी अभक्ष्य के सेवन से बचें। नित्यपिंड की जो छूट थी, वो एक मार्च से बंद की जा रही है। साधन के बारे में २०२३ जनवरी से छेदप्रायश्चित की बात जो रायपुर में बताई थी वो यथासंभव रह सकती है। आज स्मरण करा रहा हूँ। हम अपनी मर्यादाओं के प्रति पालन में सजग रहे।

पूज्यप्रवर ने छापर चतुर्मास में दो दीक्षा समारोह आयोजन करने का फरमाया। छापर चतुर्मास प्रवास स्थल प्रवेश का समय व चतुर्मास के पश्चात् विहार के दिन की घोषणा की। बायतू मर्यादा महोत्सव के प्रवेश व विहार की घोषणा करवाई। मर्यादा पत्र का पूज्यप्रवर ने श्रीमुख से वाचन किया। मर्यादा महोत्सव पर पूज्यप्रवर ने स्वरचित नव गीत 'नंदनवन भैक्षव शासन की सुषमा बढ़ाएँ' का सुमधुर संगान किया।

दोनों समय साधु-साध्वियों में दोनों समय नियमित प्रतिक्रमण हो प्रायश्चित की भावना रहे। आचार अच्छा रहे।

पूज्यप्रवर वर्ष २०२२ के लिए साधु-साध्वियों के चतुर्मास-विहार क्षेत्रों की एवं समणी केंद्रों की घोषणा की। जो साधु-साध्वियाँ बीदासर में उपस्थित हैं, वो शीघ्र ही सेवा केंद्रों एवं चतुर्मास विहार क्षेत्रों की ओर विहार करें। धर्मशासन की प्रभावना करें। श्रावक-श्राविकाओं की संभाल करें, साथ में मुमुक्षु भी तैयार करें।

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में बड़ी हाजरी का आयोजन हुआ। साध्वियों का बड़ा समुदाय इस बार देखने को मिल रहा है। साधु-साध्वियों व समणियाँ धर्मसंघ की सेवा करने के लिए कटिबद्ध रहें। चारित्रात्माओं द्वारा लेख पत्र का वाचन हुआ। पूज्यप्रवर ने मर्यादाओं का महत्त्व समझाया। जागरूकता की प्रेरणा दिलाई। श्रावक-निष्ठा पत्र का भी उच्चारण करवाया।

संघगान के साथ समारोह के समापन की घोषणा की।

संघ हमारा त्राण है - प्राण है-साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

शासन माता, असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने कहा कि मर्यादा महोत्सव का आयोजन हो रहा है। गुरुदेव तुलसी के मुखारविंद से सुना है कि यह एक कल्प का प्रयोग है, जो आंतरिक स्वास्थ्य देने वाला है। साधु-साध्वियों को पौष्टिक पाथेय आचार्यप्रवर से प्राप्त होता है। मर्यादा महोत्सव को कुंभ मेले की उपमा दी गई है।

आचार्य के लिए यह सर्वाधिक श्रम का समय है। तेरापंथ धर्मसंघ आज्ञा, मर्यादा केंद्रित धर्मसंघ है। आचार्य भिक्षु महामेधावी, महामानव थे। वे अनुभवी विज्ञ थे। उन्होंने मर्यादाओं के द्वारा संघ को संगठित किया था। संघ में व्यक्ति रहता है, तो आचार्य उसकी संभाल करते हैं, पालन-पोषण करते हैं, जैसे कमल पानी में स्थिर रहता है, तो पानी और सूर्य दोनों उसको पोषण देते हैं।

संघ के व्यक्ति एकजुट रहते हैं, तो संघ का विकास होता है। संघ हमारा त्राण है, प्राण है। संगठन व्यक्ति को कठिन से कठिन परिस्थिति में भी सुरक्षित रह सकता है। हमारी आस्था लोहे की लकीर बनकर रहे, मोम की लकीर नहीं। हमारा श्रावक समाज भी जागरूक है। सभी में श्रद्धा और गुरु आज्ञा में निष्ठा हो।

भैक्षव शासन में सबसे बड़ा प्रमाण गुरु की आज्ञा है। गुरु आज्ञा में हम सुरक्षित रह सकते हैं। आज्ञा के पति हमारी इतनी गहरी निष्ठा हो कि हम इधर-उधर की न सोचें। गुरु के आदेश-निर्देशों का पूरे मन से पालन करें। संघ की रीति-नीति के प्रति भी श्रद्धा हो। संघ का विकास करना हमारी जिम्मेवारी है। तो हमारा विकास करना संघ की जिम्मेदारी है। गुरुदेव की आज्ञा के अनुसार हम साधना-संयम में निरंतर आगे बढ़ते रहें।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि दिनेश कुमार जी ने संघीय घोषों का उच्चारण किया। मर्यादा गीत का संगान किया। मुनिवृंद, साध्वीवृंद व समणीवृंद ने सामुहिक गीत की अति भावपूर्ण प्रस्तुति दी। वृहद् मर्यादा महोत्सव में ८२ साधु, ३०६ साध्वियाँ एवं ४१ समणियाँ सहित कुल ४३२ चारित्रात्माएँ प्रवाहित हैं।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि भगवान महावीर की तुलना में आचार्यश्री महाश्रमणजी कई संदर्भों में आ जाते हैं। हमें गुरुओं के आदेश पर कुर्बान हो जाना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री : अमृत महोत्सव के आयोजन

हुबली

अभातेममं के निर्देशानुसार असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी के अमृत महोत्सव पर अमृत सिंचन का कार्यक्रम तेममं द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण प्रेरणा गीत से किया गया। सभी बहनों का स्वागत अध्यक्ष लीला दोषी ने किया।

कार्यक्रम साध्वीप्रमुखाश्रीजी के असाधारण व्यक्तित्व, लेखन और वक्तव्य के बारे में मंत्री मीनाक्षी वेदमूथा ने बताया कि भाषण प्रतियोगिता और कथानक दृश्यांकन प्रतियोगिता आयोजित किया, बहनों और कन्याओं ने भाग लिया, उन्हें पुरस्कृत भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री अंजलि कोठारी ने किया। कार्यक्रम का आभार व्यक्त मंत्री मीनाक्षी वेद मूथा ने किया।

हासन

अभातेममं के निर्देशन में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें अमृत मनोनयन वर्ष को मनाया गया। केसरिया साड़ी में सजी बहनों की उपस्थिति से एक नया उत्साह जग गया। मंगलाचरण से महिला मंडल की बहनों ने कार्यक्रम की शुरुआत की। उसके बाद संगीता कोठारी का अध्यक्षीय भाषण हुआ। सीमा तातेड़ ने साध्वीप्रमुखाश्री जी को अपना अभिनव स्रोत माना। ललिता सुराणा ने महाश्रमण जी के व्यक्तित्व की धाराएँ विभिन्न दिशा में बढ़ती हुई हमारा मार्गदर्शन करती हैं, बताया। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका प्रस्तुत की।

ममता कोठारी, ज्योति वैद मूथा, मोनिका कोठारी, रेखा सुराणा, नम्रता सुराणा ने अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने लघु नाटिका के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन ललिता सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन विनीता सुराणा ने किया।

(पृष्ठ २ का शेष)

मोक्ष प्राप्ति के बाधक तत्त्व हैं—चंडता, आवेश, गुस्सा। गुस्सा एक प्रकार की हार है। क्षमा करो, सहन करो। एक-एक श्वास को शांति से जीएँ। महान वह है, जो क्रोध रूपी विष को पीना जानता है। आने वाली हर साँस को जीना जानता है। बातों में माहिर बहुत मिलेंगे दुनिया में, सम्मान वह पाता है, जो समर बेला में सीना तानता है।

हर श्वास हमारी शुभ योग में बीते। चंडता आ जाए तो लंबे श्वास या मौन का प्रयोग करें। गालियों को सहन करना बड़ा काम है। किसी भी बात का अहंकार-घमंड नहीं करनी चाहिए। चुगली करने से बचें। बिना सोचे-विचारे काम नहीं करना चाहिए। आज्ञा-अनुशासन के अंदर रहें। आत्मानुशासन में रहने का प्रयास करें। धर्म का अबोध भी मोक्ष में बाधक है। व्यवहार में विनय भाव हो।

मोक्ष के बाधक तत्त्वों से हम बचें और साधक-तत्त्वों का हम आसेवन-आराधना करें, तो मोक्ष प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। हम दूसरों के कल्याण में जितना हो सके सहायक बनने का प्रयास करें। स्वयं भी मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि आदित्य कुमार जी, साध्वी संगीतश्रीजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 - 27 फरवरी, 2022

✦ *विवेक चक्षु है और उसे धर्म कहा गया है। अविवेकपूर्वक किया गया कार्य अनर्थकारी हो सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

आओ चलें गाँव की ओर

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में 'आओ चलें गाँव की ओर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम बोनपल्ली स्थित चिन्ना थोकुटा बस्ती में रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। मंडल की बहनों ने मंगलाचरण का सुमधुर संगान किया।

अध्यक्ष अनीता गिड़िया ने सभी का स्वागत किया। स्थानीय भाषा तेलुगु में सभी को दैनिक जीवन में स्वच्छ कैसे रहें, संक्रमण न हो, उससे कैसे बचाव करें आदि पर चंदन कोठारी ने संक्षिप्त जानकारी दी।

खाद्य सामग्री–दाल, चावल, चीनी, साबुन, शैंपू, आटा, तेल गुड़ आदि के पैकेट बनाकर, लगभग ६० पैकेट, बस्ती की बहनों को बाँटे गए। छोटे बच्चों को चिप्स, चॉकलेट बाँटे गए।

कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष रीटा सुराणा, उपाध्यक्ष सरला मेहता, मंत्री श्वेता सेठिया, समिति सदस्य पूजा पटावरी, जूली बैद, कन्या मंडल सहप्रभारी चंदन कोठारी मंडल की बहनें शालिनी दुगड़, ममता सुराणा सहित अनेक जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम की संयोजिका बहनें रीता सुराणा, सरला मेहता, पूजा पटावरी, शालिनी दुगड़ का अच्छा श्रम रहा। सिनू, इमरान का सहयोग रहा।

मंत्री श्वेता सेठिया ने आर्थिक सहयोग के लिए सभी बहनों का आभार प्रकट किया।

कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं की अध्यक्षा निर्मला संकलेचा की अध्यक्षता में ७३वाँ गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि इस अवसर पर नगर परिषद सभापति सुमित्रा वेद मेहता, पूर्व चेयरमैन प्रभा सिंघवी महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला संकलेचा, अभातेममं सदस्य सारिका बागरेचा, ओसवाल समाज अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओसवाल, मंत्री महेंद्र बैद, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, मंत्री नवीन सालेचा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा ने ध्वजारोहण किया। राष्ट्रगान का संगान किया गया और ध्वज को सलामी दी गई।

इस अवसर पर सभा सहमंत्री मोहनलाल बाफना, कोषाध्यक्ष देवीलाल ओस्तवाल संगठन मंत्री प्रकाश बालड आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य गण उपस्थित थे।

कन्या सुरक्षा सर्कल पूर्वालोकन एवं ध्वजारोहण समारोह

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथी महिला मंडल के तत्त्वावधान में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में गवर्नमेंट हाई स्कूल में कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कन्या सुरक्षा स्तंभ को सुंदर तिरंगे रंग से सजाया गया। उसके आगे शुभ रंगोली बनाकर, पूर्वावलोकन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण का सुसंगान हुआ। ध्वजारोहण स्कूल के प्रधानाध्यापक एवं मंडल अध्यक्ष ने कियां स्कूल की कन्याओं, अध्यापकों, मंडल के पदाधिकारीगण, सभी ने राष्ट्रगान का संगान किया। स्कूल के हिंदी शिक्षक जहाँगीर ने 'बेटी बचाओ' पर अपनी प्रस्तुति दी और कविताएँ सुनाई। प्रधानाध्यापक ने सभी का स्वागत किया। अध्यक्ष अनीता गिड़िया ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर शुभकामनाएँ प्रेषित की।

पूर्व अध्यक्ष रीता सुराणा, अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष अनिल कातरेला ने भी शुभकामनाएँ दी। उपाध्यक्ष सरला मेहता, कन्या मंडल की दीपल सेठिया और स्कूल के सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अणुव्रत गीत का संगान किया गया। महिला मंडल की तरफ से सभी बच्चों को अल्पाहार की व्यवस्था की गई। अनिल कातरेला की तरफ से बच्चों को बिस्किट और पेन बाँटे गए। मंत्री श्वेता सेठिया ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

कन्या सुरक्षा सर्किल पर ध्वजारोहण

सरदारपुरा, जोधपुर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, सरदारपुरा-जोधपुर के तत्त्वावधान में मुदित मेंशन के पास स्थित महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्कल व पाल लिंक रोड पर स्थित कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोजण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित हुए इस कार्यक्रम में जोधपुर शहर दक्षिण के कांग्रेस अध्यक्ष नरेश जोशी, तेरापंथी सभा, सरदारपुरा के अध्यक्ष मानक तातेड़, मंत्री महावीर चोपड़ा, निवर्तमान अध्यक्ष उम्मेद राज सिंघवी भी उपस्थित रहे।

महिला मंडल अध्यक्षा सरिता कांकरिया ने पधारे हुए सभी भाई-बहनों का स्वागत करते हुए गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएत्र दी। तत्पश्चात सभी भाई-बहनों ने मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी के दर्शन किए एवं मंगल पाठ का श्रवण किया। आभार ज्ञापन निवर्तमान अध्यक्ष विमला बैद द्वारा किया गया। मंत्री चंद्रा जीरावला ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

जीन्द।

तेममं के तत्त्वावधान में सभा भवन, जीन्द में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें मनोनयन दिवस के उपलक्ष्य में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। क्विज में १० बहनों ने भाग लेकर अपने ज्ञान की वृद्धि की। रेणु जैन तथा हर्षिता जैन का ग्रुप प्रथम स्थान पर रहा, उपासिका कांता मित्तल, राज जैन, प्रेक्षा जैन, निर्मला जैन का ग्रुप दूसरे स्थान पर रहा, दीपा जैन तथा सुमन जैन का ग्रुप तृतीय स्थान पर रहा।

निर्णायक की भूमिका जीन्द सभा मंत्री मास्टर नारायण सिंह रोहिल्ला, नरेश जैन ने निभाई। क्विज प्रतियोगिता का संचालन जीन्द, तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल ने किया।

प्लास्टिक निषेध कार्यक्रम

जयपुर-शहर।

विद्यालय के बच्चों को प्लास्टिक के बारे में मंडल की बहन उषा द्वारा जागरूक किया गया कि प्लास्टिक के गिलास, प्लेट का प्रयोग करने से या जो लोग प्रयोग कर जो इसको फेंक देते हैं, उनको खाकर जानवर बीमार हो जाते हैं, उनका इस्तेमाल अपने लिए कितना नुकसानदायक होता है, प्लास्टिक की जगह कागज या कपड़े की बनी हुई चीजें ही प्रयोग में लानी चाहिए। पोस्टर के जरिए इसके बारे में बच्चों और बड़ों को इसकी जानकारी दी।

अभातेममं की सदस्य विमला दुगड़ और मंडल की बहनें इस कार्यक्रम में शामिल हुई। विद्यालय के प्रिंसिपल और अध्यापकों ने मंडल की बहुत सराहना की। सबका आभार निर्मला सुराणा ने किया।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

राजाजीनगर।

अभातेममं के निर्देशन में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें अमृत मनोनयन वर्ष के उपलक्ष्य में राजाजीनगर तेरापंथ महिला मंडल ने क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया। चैतन्य रश्मि पुस्तक पर आधारित प्रतियोगिता का महिलाओं एवं कन्याओं हेतु विभिन्न रचनात्मक राउंड में आयोजित किया गया। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत द्वारा सामुहिक मंगलाचरण किया। स्वागत भाषण अध्यक्ष चेतना वेदमुथा ने किया।

क्विज प्रतियोगिता के विजेताओं में प्रथम–मोक्ष ग्रुप–मैना दक, चंद्रा गुलगुलिया, कविता सिसोदिया, द्वितीय–चरित्र ग्रुप–(कन्या मंडल) दिया गन्ना, रिक्षिका बाफना, शगुन वेदमुथा एवं तृतीय–दर्शन ग्रुप–बबिता मेहता, ललिता मुथा, संगीता गन्ना रहे।

सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रचार-प्रसार मंत्री कविता गादिया ने किया। मंत्री सीमा श्रीश्रीमाल ने आभार ज्ञापन किया।

आहार विषय पर कार्यशाला का आयोजन

शिवकासी, तमिलनाडु।

अभातेममं के निर्देशानुसार रूपांतरण शिल्पशाला की 'आहार' विषय पर कार्यशाला का आयोजन शिवकासी, तेममं ने किया। नमस्कार महामंत्र के साथ शुरुआत की गई। संपत देवी डागा ने ओज, रोम और कवल आहार के बारे में सुंदर कविता के माध्यम से अपनी बात कही। अध्यक्ष सुशीला सेठिया ने सबका स्वागत किया और आहार संयम के बारे में अपने विचार प्रकट किए।

रानी बरड़िया ने चर्चा करते हुए आहार के प्रकार राजसिक, तामसिक और सात्त्विक भोजन के बारे में अपने भाव प्रस्तुत किए। मंत्री कुसुम बैद ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया और आहार के बारे में कहा कि आहार कला है, विज्ञान हे, धर्म है और हमारे संस्कार का निर्माण है। पुरानी ढालों के पुनरावर्तन के बारे में चौदह भावना की ढाल पर चर्चा की गई। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

ज्ञान रूपी आत्मा और अनुभव रूपी शरीर...

(पृष्ठ २ का शेष)

ज्ञान का उपयोग हम प्रवचन में भी कर सकते हैं। प्रवचन में भी समय की नियमितता रखनी चाहिए और समय पर ही पूरा करने का प्रयास करें। तैयारी के साथ जाएँ। आगम-सूत्र का भी प्रयोग होता रहे। व्याख्यान के दो अंग होते हैं–आत्मा और शरीर। आत्मा है, वक्ता का ज्ञान व शरीर है–अनुभव। अप्रामाणिक बात बोलने से बचें। साधार बात बोलनी चाहिए। व्याख्यान के तरीकों को समझाया। व्याख्यान देने के लिए पहले ज्ञान होना जरूरी है।

मुनि विजय कुमार जी स्वामी ने गीत की प्रस्तुति दी। ऋतिक बोथरा, सीमा गिड़िया ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

✦ *क्रोध दुर्बलता है। सामर्थ्य होते हुए भी नहीं मारना अहिंसा की साधना है। सक्षम होते हुए भी क्षमा करना बड़प्पन होता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 - 27 फरवरी, 2022

साध्वीप्रमुखाश्री : अमृत महोत्सव के आयोजन

५०वाँ मनोनयन दिवस कार्यक्रम

चित्तौड़गढ़।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का ५०वाँ मनोनदयन दिवस अमृत महोत्सव के रूप में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महिला मंडल की वरिष्ठ श्राविका प्रेम देवी सुराणा ने की। महिला मंडल अध्यक्ष प्रीति ढीलीवाल ने सभी का स्वागत किया। तमन्ना बीकानेरिया ने भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कषाय रूपांतरण पर डॉ० प्रियंका ढीलीवाल ने अपने विचार रखे। उमा सुराणा ने आहार विषय पर कहा कि आहार व जीवन पर्यायवाची हैं। आहार है तो जीवन है और जीवन है तो आहार है परंतु कब, क्या और कितना खाना है यह जानना ज्यादा जरूरी है। डॉ० प्रियंका ढीलीवाल का टीपीएफ की सेंट्रल जोन सेक्रेटरी बनने पर स्वागत किया किया।

महिला मंडल द्वारा पूर्व अध्यक्ष व पार्षद उमा सुराणा का आचार्यश्री महाश्रमण सेतु बनवाने में अनुशंसा करने पर स्वागत किया गया। मंत्री रितु सुराणा ने महाश्रमणी जी के ५०वाँ मनोनयन दिवस पर शुभकामनाएँ दी एवं क्विज एवं कार्यक्रम का संचालन किया। अध्यक्ष प्रीति ढीलीवाल ने प्रत्येक प्रतिभागी को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। महिला मंडल की वरिष्ठ श्राविका प्रेम देवी सुराणा ने अमृत महोत्सव के ५१ संकल्प पूरे करने पर उनका साहित्य व उपरणा ओढ़ाकर सम्मान किया। कार्यक्रम में महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष स्नेहा ढीलीवाल, ज्योति सुराणा, चंचल पितलिया, रेखा खाब्या, तमन्ना जैन, सानवी सुराणा, रिधिमा जैन आदि उपस्थित थे।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का मनोनयन दिवस

कांटाबांजी।

तेरापंथ भवन में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में शासन माता मातृहृदय असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५१वें मनोनयन दिवस के उपलक्ष्य में अमृत महोत्सव का आयोजन किया गया। तेरापंथ महिला मंडल कांटाबांजी के द्वारा अभातेममं के निर्देशन में उपरोक्त कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के द्वारा नवकार मंत्र के उच्चारण से हुई। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया।

मुनि दीपकुमार जी ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के जीवन के विशिष्टताओं पर सभी का ध्यान आकर्षित किया। सभा अध्यक्ष विनोद जैन, तेममं अध्यक्ष बॉबी जैन एवं तेयुप अध्यक्ष हेमंत जैन ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति अपनी भावनाएँ प्रेषित की। एक कथानक दृश्य शासनमाता महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के जीवन पर प्रस्तुत किया गया। उसके पश्चात भाषण प्रतियोगिता एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी रखी गई, जो साध्वीप्रमुखाश्रीजी के जीवन पर आधारित थी। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सपना जैन ने किया।

अमृत महोत्सव

उधना।

साध्वी सम्यक्प्रभाजी के सान्निध्य में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें मनोनयन दिवस पर अमृत महोत्सव का तेरापंथ भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम सभा मंत्री जवेरीलाल दुगड़ ने कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए अमृत महोत्सव मनाने की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष पारसमल बाफना ने अपने भाव व्यक्त किए।

साध्वी सम्यक्प्रभाजी ने प्रमुखाश्रीजी के द्वारा महिला समाज के लिए किए गए नारी उत्थान के कार्यों के बारे में बताया। उधना भजन मंडली एवं तेयुप द्वारा अभिवंदना गीत प्रस्तुत किया गया। महिला मंडल, उधना की ५१ बहनों द्वारा प्रस्तुत एक सुंदर अभिवंदना गीत ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

महासभा उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल बाफना, महासभा गुजरात प्रभारी अनिल चंडालिया, तेयुप अध्यक्ष मनीष दक, महिला मंडल अध्यक्ष जस्सु बाफना और अभातेममं गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना एवं उपासक मिश्रीमल नंगावत ने अपनी भावनाएँ प्रेषित की। कन्या मंडल एवं किशोर मंडल ने नुक्कड़ नाटक द्वारा अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वी वर्धमानयशा जी ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के साथ हुए पूर्व के संस्मरणों को अपने भावों द्वारा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मलययशा जी ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री का अमृत महोत्सव

तिरुवन्नामलै।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में एवं साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अभ्यर्थना कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि दूरदृष्टा आचार्यश्री तुलसी की पारखी नजर ने तेरापंथ संघ के साध्वी समाज को ऐसा विलक्षण नेतृत्व प्रदान किया जिसका हमें सात्त्विक गौरव है।

कार्यक्रम का प्रारंभ तेयुप के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ सभा अध्यक्ष राजेंद्र सेठिया ने श्रद्धासिक्त विचार व्यक्त किया। महावीर सेठिया ने कविता प्रस्तुत की। महिला मंडल ने अर्चना गीत का संगान किया। रेखा, खुशबू और दीपिका सेठिया ने महाश्रमणी काव्यम् की प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने गीत का संगान किया। तेयुप के पूर्वाध्यक्ष इंद्रजीत सेठिया ने विचार प्रस्तुत किए। दीया सेठिया ने स्वरचित काव्यपाठ किया। साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी डॉ० राजुलप्रभाजी, साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभाजी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

सरला सेठिया ने भावाभिव्यक्ति दी एवं महिला मंडल में भावपूर्ण संगान किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने डोरेमोन और उनके दोस्त बनकर साध्वीप्रमुखाश्री जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए प्रस्तुति दी।

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी सिद्धियशाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी एवं साध्वी शौर्यप्रभाजी ने गीत का सामुहिक संगान किया। कार्यक्रम का संचालन गौरव सेठिया ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी का मनोनयन दिवस

सरदारपुरा।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५०वें मनोनयन दिवस के उपलक्ष्य में तेममं द्वारा अभिवंदना स्वरूप विविध कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम की इस श्रेणी में पाल रोड स्थित तेरापंथ भवन, अमरनगर में साध्वीप्रमुखाश्री के जीवन पर आधारित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुनि तत्त्वरुचि जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में संभागी बहनों ने जैन धर्म के ५ महाव्रत यथा अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचार्य व अपरिग्रह के नाम पर ग्रुप बनाए गए।

पाँच चरण में आयोजित हुई इस प्रतियोगिता में मोनिका चोरड़िया व संतोष मेहता ने निर्णायक की भूमिका निभाई। महिला मंडल के गीत द्वारा मंगलाचरण से प्रारंभ हुए कार्यक्रम में प्रथम स्थान ब्रह्मचार्य ग्रुप, द्वितीय स्थान सत्य ग्रुप व तृतीय स्थान अहिंसा ग्रुप ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम में तेममं अध्यक्ष सरिता कांकरिया, निवर्तमान अध्यक्ष विमला बैद आदि की विशेष उपस्थिति रही। मंडल मंत्री चंद्रा जीरावला ने आभार ज्ञापन किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

शांतिनगर, दिल्ली।

मुकेश-नीलम जैन की सुपौत्री व अर्पित-अदिति जैन, निवासी शांतिनगर, दिल्ली की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक राजकुमार जैन व तेयुप मंत्री एवं संस्कारक सौरभ आंचलिया ने संपूर्ण विधि एवं मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया। मुकेश जैन ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

मुकेश कुमार जैन का परिवार दिगंबर संप्रदाय से है। जैन संस्कार विधि से नामकरण करवाने पर दिल्ली जैन संस्कार विधि टीम ने बधाई एवं साधुवाद दिया।

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा।

सैंथिया निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी प्रतापचंद-कांता पुगलिया के सुपुत्र दिनेश-सानंदा पुगलिया की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक राकेश चोरड़िया ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम को संपादित करवाया। उपाध्यक्ष एवं जैन संस्कार के पर्यवेक्षक ज्ञानमल लोढ़ा ने पुगलिया परिवार द्वारा विधिवत रूप से मंगलभावना यंत्र की स्थापना करवाई

मंत्री गगनदीप बैद ने पुगलिया परिवार का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक हितेंद्र बैद, सह-संयोजक नवीन सेठिया ने किया।

पाणिग्रहण संस्कार

राजाराजेश्वरी नगर।

बैंगलोर निवासी, स्वर्गीय मणिकचंद सेठिया की सुपुत्री संतोष सेठिया का शुभ विवाह विशाखापट्नम निवासी स्वर्गीय पूनमचंद कोठारी के सुपुत्र प्रकाश कुमार कोठारी के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा सानंद आयोजित हुआ। संस्कारक राकेश दुधोड़िया तथा सह-संस्कारक दिनेश मरोठी द्वारा संपूर्ण विधि-विधान से विवाह संस्कार संपादित करवाया गया।

इस अवसर पर तेयुप के मंत्री विकास छाजेड़, संगठन मंत्री राकेश दुगड़, जैन संस्कार विधि के प्रभारी गौतम नाहटा उपस्थित थे। परिजनों को अभातेयुप वैवाहिक प्रमाणपत्र, मंगलभावना पत्रक प्रदान किया।

विवाह संस्कार

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी इंद्रा देवी-पूनमचंद भूरा की सुपुत्री सुरभि का शुभ विवाह गंगाशहर निवासी शारदादेवी स्व० बुलाकीचंद सेठिया के सुपुत्र मुकेश के साथ जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न हुआ। अभातेयुप संस्कारक रतनलाल छलाणी, पवन छाजेड़ और देवेंद्र डागा ने विवाह संस्कार का सारा मांगलिक आयोजन विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

कार्यक्रम के दौरान समाज के गणमान्य जनों और पारिवारिक लोगों की उपस्थिति रही। तेयुप, गंगाशहर के मंत्री देवेंद्र डागा ने भूरा व सेठिया परिवार को बधाई प्रेषित की।

विवाह संस्कार

भुज (कच्छ)।

जीतेंद्र मेहता के सुपुत्र वत्सल कुमार एवं दीपक गांधी की सुपुत्री हितस्वी कुमारी का शुभ विवाह जैन संस्कार विधि द्वारा शुद्ध मंत्रोच्चार के साथ किया गया। संस्कार के रूप में नरेंद्र मेहता, प्रभु मेहता एवं भरत बाबरिया उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष हसमुख मेहता, उपाध्यक्ष अशोक सिंघवी, तेयुप अध्यक्ष आशीष बाबरिया एवं मंत्री महेश गांधी उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 - 27 फरवरी, 2022

✦ *बाह्य आँखों का महत्त्व है तो भीतरी आँख और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। साधक को उस आँख के द्वारा स्वयं को देखने का अभ्यास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

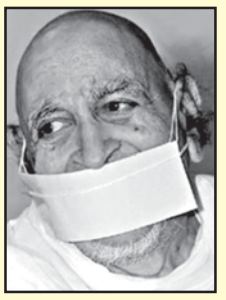

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

भाव-परिवर्तन का अभियान

(पिछला शेष) दीपक को किसी ढक्कन से ढक दिया जाए तो उसके प्रकाश की एक भी किरण बाहर नहीं जा सकती। उसी को यदि जालीदार ढक्कन से ढका जाता है तो प्रकाश छन-छनकर बाहर आ जाता है और ढक्कन को सर्वथा हटा दिया जाए तो पूरा प्रकाश फैल जाता है। इसी प्रकार आवृत ज्ञानचेतना प्रकाश के मध्य अवरोध बन जाती है। क्योंकि आवरण सघन है। जालीदार ढक्कन से प्रकाश कण बाहर आते हैं। चैतन्य-केंद्र जालीदार ढक्कन के समान हैं। इनसे छन-छनकर ज्ञान-रश्मियाँ बाहर फैलती हैं। यह एक प्रकार का अतीन्द्रिय ज्ञान है। ढक्कन को हटाने का मतलब है समूचे शरीर को स्फटिक की भाँति निर्मल बना लेना। इस स्थिति में आवरण का सर्वथा विलय हो जाता है, पूरे शरीर से ज्ञान-रश्मियाँ बाहर फैल जाती हैं। पर इसके लिए दीर्घकालिक अभ्यास और सघन श्रद्धा की अपेक्षा रहती है। जब तक पूरा शरीर करण नहीं बनता है, तब तक सर्वावधि अवधिज्ञान या केवलज्ञान उपलब्ध नहीं हो सकता।

प्राचीन काल में चैतन्य-केंद्रों की कोई पहचान नहीं थी, यह बात नहीं है। शरीर-शास्त्रियों ने शरीर में जो विशेष ग्रंथियाँ मानी हैं, वे चैतन्य-केंद्र ही हैं। तंत्र-शास्त्र और हठयोग में जिनको चक्र कहा जाता है, वे चैतन्य-केंद्र ही हैं। आज भी भाषा में शरीर में जहाँ-जहाँ विद्युत चुंबकीय क्षेत्र (इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड) हैं, वहाँ-वहाँ चैतन्य-केंद्र हैं। आधुनिक परिवेश में इनकी इस रूप में प्रस्तुति ध्यान की प्रक्रिया को सहज और सरल बनाने में निमित्त बनेगी, ऐसी मेरी मान्यता है।

सामान्यतः चैतन्य-केंद्र दो अवस्था में रहते हैं—निष्क्रिय या सुप्त और सक्रिय या जाग्रत। किसी मनुष्य का कोई चैतन्य-केंद्र सहज रूप में सक्रिय हो जाता है, किंतु सबके सभी केंद्र सक्रिय नहीं रहते। अभ्यास के द्वारा एक या अनेक केंद्रों को सक्रिय या जाग्रत किया जा सकता है। चैतन्य केंद्र इस नश्वर शरीर में एक प्रकार के गुप्त खजाने हैं। प्रेक्षाध्यान का अभियान इनको जाग्रत करने के लिए है। श्वास-प्रेक्षा, शरीर-प्रेक्षा, अंतर्यात्रा, कायोत्सर्ग—ये सभी उसी अभियान के अंग हैं, चैतन्य-केंद्रों का नियंत्रण हुए बिना हमारे भावों का नियंत्रण नहीं हो सकता है। जब तक चैतन्य-केंद्र नहीं बदलते हैं, तब तक भाव-परिवर्तन की भी कोई संभावना नहीं है। भाव, स्वभाव या आदत बदले बिना व्यक्तित्व में बदलाव नहीं आ सकता, आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता। ऊर्ध्वारोहण भी नहीं हो सकता। इस दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। जिस साधक ने घनीभूत अवस्था के साथ यह प्रयोग किया है, वह अपने लक्ष्य में सफल हुआ है।

चैतन्य-केंद्रों का प्रभाव

ज्ञान केन्द्र मस्तिष्क में, सहस्त्रार अभिधान।
ज्ञानमयी जो चेतना, उसकी है पहचान।।
शांति केन्द्र सुख-उत्स है, उसका तालु स्थान।
शांति-गवेषक नर करे, समुचित अनुसंधान।।
ज्योति केन्द्र पर ध्यान से आत्मिक अभ्युत्थान।
ज्योतित कण-कण को करे, यह सुन्दर अनुपान।।
दर्शन-केन्द्र प्रसिद्ध है, हितकर आज्ञाचक्र।
भृकुटि-मध्य प्रेक्षा सफल, जो मन रहे अवक्र।।

प्रश्न : शरीर प्रेक्षा के अंतर्गत आपने चैतन्य केन्द्रों की चर्चा की है और यह भी बताया कि चैतन्य-केन्द्र क्या हैं? ये केन्द्र कौन-कौन से हैं? कहां हैं? तथा इनकी सुषुप्ति और जागृति से मानव पर क्या प्रभाव होता है?

उत्तर : मानव शरीर में अनेक चैतन्य-केन्द्र हैं। सारे केन्द्र ज्ञात नहीं हो पाए हैं और यह संभव भी नहीं है, क्योंकि यह पहले बताया जा चुका है कि समूचे शरीर को करण बना लेने पर शरीर का कण-कण चेतना का विशिष्ट केंद्र बन सकता है। फिर भी कुछ केंद्रों की अलग से पहचान बनाई जा सकती है। प्रेक्षा-ध्यान के अभ्यास में अब तक मुख्य रूप से तेरह केंद्रों पर ध्यान करवाया जा रहा है। उनके नाम, स्थान और परिणाम के संबंध में किसी प्रकार की अस्पष्टता नहीं है। अब क्रमशः एक-एक केंद्र के बारे में जानकारी दी जा रही है।

मनुष्य के शरीर में दो महत्त्वपूर्ण संस्थान हैं- नाड़ी संस्थान और ग्रंथि-संस्थान। नाड़ी-संस्थान का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है-मस्तिष्क। हमारा सारा ज्ञान और क्रिया उसी से नियंत्रित होती है। ज्ञानतंतु और कर्मतंतु दोनों उसी से जुड़े हुए हैं। शरीर का पूरा साम्राज्य मस्तिष्क के इंगित चलता है। मस्तिष्क का मध्य भाग या चोटी का भाग साधना की दृष्टि से असाधारण स्थान है। इस स्थान में अर्तीद्रिय चेतना का केन्द्र है। यही है हमारा ज्ञानकेन्द्र। हठयोग की भाषा में इसे सहस्त्रार-चक्र कहा गया है। हमारे मस्तिष्क के दोनों भाग-बायां भाग और दायां भाग चेतना से संबद्ध है। शरीर शास्त्री बतलाते हैं कि मस्तिष्क का बायां भाग भाषा, गणित, तर्क आदि के लिए प्रयोग में आता है और दायां भाग प्रज्ञा के लिए उत्तरदायी है। ज्ञान केन्द्र का संबंध उस दाएं भाग से ही अधिक है।

ज्ञान-केन्द्र के विकास से अंतःप्रज्ञा जाग्रत होती है। अंतःप्रज्ञा के जागरण का संबंध ललाट से भी है। पीयूष ग्रंथि उसका मुख्य केन्द्र है। किंतु ऐसा लगता है कि उसका उत्तरवर्ती विकास ज्ञान-केंद्र के माध्यम से ही हो सकता है। इस दृष्टि से ज्ञान-केंद्र का ध्यान बहुत महत्त्वपूर्ण है। मानसिक ज्ञान का संपूर्ण विकास इसी केंद्र की सक्रियता में होता है। ज्ञान-केंद्र सुप्त या निष्क्रिय रहता है तो व्यक्ति तीव्र प्रयत्न करने के बावजूद भी अपनी अंतःप्रज्ञा को विकसित नहीं कर सकता। केंद्र-जागरण की दिशा में उठा हुआ एक-एक पग भी व्यक्ति को अपनी मंजिल तक पहुंचा सकता है। इस केंद्र की सर्वांगीण सक्रियता में केवलज्ञान की उपलब्धि को भी नकारा नहीं जा सकता।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(५८)

तुमने मेरे मन को माँगा
भोले इस बचपन को माँगा
पर देखो पल-पल में इनके
साथ तुम्हें ही रहना होगा
पोर-पोर में दर्द बिखेरो
या मुझको खुशियों से घेरो
सुख-दुख की रिश्तेदारी का
भार तुम्हें ही वहना होगा।

तूफानों के बीच खड़ी में
तुमने तट की याद दिलाई
गरल निगल संतुष्ट हुई में
तुमने इमरत धार पिलाई
सोए थे जो सपने तुमने
दस्तक देकर उन्हें जगाया
सहम गई मैं कल्पित भय से
तुमने उसको दूर भगाया
जीवन दिया मृत्यु भी दो तो
मुझको कुछ परवाह नहीं है
किंतु मुझे कब क्या करना है
यह तुमको ही कहना होगा।।

मन की सरहद पर लड़ने का
तुमने ही आदेश दिया है
हलचल पैदा करूँ समर में
तुमने वह आवेश दिया है
प्रिय मस्ती का जीवन मुझको
तुमने दी चिंतन की धारा
रहती मैं अपनी सीमा में
तुमने ही झट तोड़ी कारा
विजय मिली अब हार अगर दो
उसका भी मैं वरण करूँगी
पर जीवन का नाजुक दर्रा
साथ-साथ ही गहना होगा।।

पूनम की ले हँसी धरा पर
क्या तुम अम्बर से आए हो
दूर सितारों की दुनिया से
ये उजली किरणें लाए हो
धरती के इन चेहरों पर तो
अब भी देखो तम के पहरे
जितना धोते हो तुम उनको
बन जाते उतने ही गहरे
मन की जिद्दी साधों को तुम
समझाओ या तोड़ गिराओ
किंतु समंदर की लहरों पर
साथ-साथ ही बहना होगा।।

(क्रमशः)

संबोधि

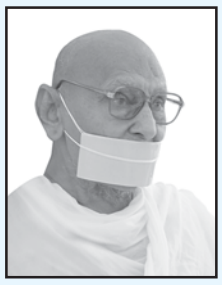

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

भगवान् प्राह

(१२) योगः शुभोऽशुभो वापि, चतस्रो ह्यशुभा ध्रुवम्।
निवृत्तिवलिता वृत्तिः, शुभो योगस्तपोमयः।।

योग शुभ और अशुभ—दो प्रकार का होता है और शेष चार सूक्ष्म प्रवृत्तियाँ अशुभ ही होती हैं। निवृत्ति-युक्त वर्तन शुभ योग कहलाता है और वह तप-रूप होता है।

आत्मा शरीर से मुक्त नहीं है इसलिए वह प्रवृत्ति करती है। स्वतंत्र आत्मा में शरीरजन्य प्रवृत्ति नहीं होती। जहाँ प्रवृत्ति है वहाँ बंध है। प्रवृत्ति के शुभ और अशुभ दो रूप हैं। दोनों ही प्रवृत्तियों से आत्मा पुद्गलों को ग्रहण करती है और अपने साथ एकीभूत करती है। वे पुद्गल ही कर्म रूप में परिणत हो जाते हैं। मोक्ष है पुद्गलों का सर्वथा क्षय। वह निवृत्त अवस्था है।

आत्मा के सूक्ष्म स्पंदन का अनुमान करना कठिन है। बाहरी चेष्टाओं से उसकी प्रतिक्रिया जानी जा सकती है। अंतर्मन की किया आकार, प्रकार, संकेत, गति, चेष्टा, भाषण आदि से जानी जा सकती है तो सूक्ष्म अध्ययन से अवचेतन मन का परिज्ञान क्यों नहीं हो सकता? समस्त प्रवृत्ति के हेतु हैं—शरीर, वाणी और मन। इनकी प्रवृत्ति को योग कहा जाता है। योग स्थूल है, स्पष्ट है और सूक्ष्म प्रवृत्तियों का परिचायक भी है। आत्मा अमूर्त है अतः इन स्थूल प्रवृत्तियों से परिज्ञात नहीं हो सकती।

(१३) अविरतिर्दुष्प्रवृत्तिः, सुप्रवृत्तिस्त्रिधास्रवः।
यथाक्रमं निवृत्तिश्च, कर्माऽकर्मविभागतः।।

अविरति, दुष्प्रवृत्ति, सुप्रवृत्ति, निवृत्ति—इनका कर्म और अकर्म के आधार पर इस प्रकार विभाग होता है—प्रथम तीन कर्म हैं इसलिए उनसे कर्म का आस्रवण होता है। निवृत्ति अकर्म है इसलिए निरोधात्मक है, संवर है।

(१४) अशुभैः पुद्गलैर्जीवं, बध्नीतः प्रथमे उभे।
तृतीयं खलु बध्नाति, शुभैरेभिश्च संसृतिः।।

अविरति और दुष्प्रवृत्ति अशुभ पुद्गलों से और सुप्रवृत्ति शुभ पुद्गलों से जीव को आबद्ध करती है। शुभ और अशुभ पुद्गलों का बंधन ही संसार है।

(१५) अशुभांश्च शुभांश्चापि, पुद्गलांस्तत्फलानि च।
विजहाति स्थितात्माऽसौ, मोक्षं यात्यपुनर्भवम्।।

जो स्थितात्मा शुभ-अशुभ पुद्गल और उनके द्वारा प्राप्त होने वाले फल का त्याग करता है, वह मोक्ष को प्राप्त होता है। फिर वह कभी जन्म ग्रहण नहीं करता।

प्रवृत्ति चंचलता है और निवृत्ति स्थिरता। निवृत्ति-दशा में आत्मा अपने स्वरूप में ठहर जाती है। वहाँ शारीरिक, मानसिक और वाचिक क्रियाओं का सर्वथा निरोध हो जाता है। उस स्थिति में पुद्गलों का प्रवेश और उनका फल छूट जाता है। आत्मा मुक्त हो जाती है। मुक्त आत्माओं का जन्म-मरण नहीं होता।

(१६) अशुभानां पुद्गलानां, प्रवृत्त्या शुभया क्षयः।
असंयोगः शुभानाञ्च, निवृत्त्या जायते ध्रुवम्।।

शुभ प्रवृत्ति से पूर्व अर्जित—बद्ध अशुभ पुद्गलों—पाप-कर्मों का क्षय होता है। निवृत्ति से शुभ-अशुभ—दोनों प्रकार के कर्म-पुद्गलों का संयोग भी रुक जाता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-२९: क्या यह चारित्र संघबद्ध साधना में होता है?
उत्तर : इस चारित्र वालों की चर्या पृथक् होती है। उनका संघ से सीधा संबंध नहीं रहता। उनके गोचरी आदि का क्रम अलग ही रहता है।

प्रश्न-३०: क्या परिहार विशुद्धि चारित्र की परंपरा चलती है?
उत्तर : परिहार विशुद्धि चारित्र सबसे पहले तीर्थंकर से ग्रहण किया जाता है। उसके बाद उसी मुनि से ही यह चारित्र ग्रहण किया जा सकता है। इससे आगे उसकी साधना नहीं की जा सकती।

प्रश्न-३१ : यथाख्यात चारित्र चरम शरीरी में होता है या अचरम शरीरी में?
उत्तर : दोनों में हो सकता है। अचरम शरीरी में उपशम यथाख्यात चारित्र हो सकता है जबकि चरम शरीरी में क्षायक यथाख्यात चारित्र होता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य सिद्धसेन

जीवन के संध्यकाल में आचार्य सिद्धसेन प्रतिष्ठानपुर (पृथ्वीपुर) पहुँचे। आयुष्यबल को क्षीण जानकर आचार्य सिद्धसेन ने अपने योग्य शिष्य को पद पर नियुक्त किया और स्वयं ने अनशन ग्रहण किया। परम समाधि में आचार्य सिद्धसेन दिवाकर का स्वर्गवास हुआ।

एक समर्थ कवि, मधुर वक्ता, महान् धर्मोपदेशक, चिंतनशील, गंभीर विचारक, जैनशासन के अतिशय प्रभावी आचार्य के चले जाने से लोगों के हृदय में आघात लगा। संयोग से एक वैतालिक चारण कवि विशाला गया; वहाँ आचार्य सिद्धसेन की भगिनी साध्वी सिद्धश्री से मिला। उस समय चारण को आचार्य सिद्धसेन की याद आ गई। वह उदास मन से श्लोक का अर्धांश बोला—

'स्फुरंति वादिखद्योताः सांप्रतं दक्षिणापथे'

इस समय दक्षिण में वादी रूपी जुगनूँ चमक रहे हैं। साध्वी सिद्धश्री आचार्य सिद्धसेन की भाँति अपार बुद्धि-वैभव की धनी थी। वैतालिक चारण की कविता सुनकर वह समझ गई—अब विद्वान् बंधु आचार्य सिद्धसेन संसार में नहीं रहे हैं। उसने वाग्मी चारण द्वारा उच्चारित श्लोक का उत्तरांश पूर्ण करते हुए कहा—

नूनमस्तंगतोवादी, सिद्धसेनो दिवाकर : आचार्य सिद्धसेन दिवाकर निश्चय ही अस्त हो गए हैं। साध्वी सिद्धश्री में भाई के स्वर्गवास से विशेष वैराग्य भाव उदय हुआ। नश्वरधर्मा इस शरीर की अंतपरिणति समझकर उसने अनशन ग्रहण कर लिया। गीतार्थ श्रुतधर मुनियों के निर्देशन में अपने चारित्ररत्न की सम्यग् आराधना करती हुई वह भी सद्गति को प्राप्त हुई।

आचार्य सिद्धसेन ने अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से अनेक राजाओं को बोध दिया था। सात राजाओं को अथवा अठारह राजाओं को आचार्य सिद्धसेन द्वारा बोध देने की बात अधिक विश्रुत है।

आचार्य सिद्धसेन का युग आरोह और अवरोह का युग था। संस्कृत भाषा का उत्कर्ष एवं प्राकृत भाषा का अपकर्ष हो रहा था। पुस्तकों के केंद्रीयकरण की प्रवृत्ति आरंभ हो चुकी थी। श्रमण जीवन में शिथिलाचार प्रवेश पा रहा था। राजसम्मान प्राप्त जैनाचार्यों की दृष्टि में व्यक्तित्व प्रभावना का लक्ष्य प्रमुख एवं साधुचर्या की बात गौण बन गई थी। श्रमणों द्वारा गजशिविका आदि विशेष वाहनों का उपयोग भी उस युग में होने लगा था।

आचार्य सिद्धसेन का जीवन-प्रसंग इन सारे बिंदुओं का संकेतक है।

पंडित बेचरदासजी ने सिद्धसेन दिवाकर को विक्रम की पाँचवीं शताब्दी का आचार्य माना है। पंडित दलसुख मालवणिया ने इस स्थिति को निर्बाध बताकर समर्थन किया है।

आचार्य सिद्धसेन न्यायप्रतिष्ठापक, कुशल वाग्मी एवं साहित्याकाश के दिवाकर थे। उनकी नव-नवोन्मेषप्रदायिनी मनीषा जैनशासन के लिए वरदान सिद्ध हुई।

अनेकांत के उद्गाता की, प्रथम पंक्ति में पहला नाम।
सम्मति-कर्ता सन्मतिदाता, 'सिद्धसेन' अभिधान ललाम।।

(व्यवहार बोध-८३)

आचार्य भद्रबाहु (द्वितीय)

ये भद्रबाहु श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु से भिन्न हैं। इनकी प्रसिद्धि ज्योतिर्विद् तथा निर्युक्तिकार के रूप में अधिक है। इन्होंने आगम-साहित्य पर दस निर्युक्तियाँ बनाई थीं। ये प्रतिष्ठानपुर में रहने वाले एक ब्राह्मण के पुत्र थे। सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद् वराहमिहिर उनका छोटा भाई था। दोनों ही निर्धन और निराश्रित थे। दोनों ने ही साथ में दीक्षा ली। सद्गुणों के कारण भद्रबाहु आचार्य बना दिए गए। यह वराहमिहिर से सहन नहीं हो सका। वह साधु-वेश छोड़कर प्रतिष्ठानपुर के महाराज जितशत्रु का कृपापात्र पुरोहित बन गया। अपने आपको ज्योतिष-शास्त्र का अधिकारी बताने लगा। परंतु कुछ भविष्यवाणियाँ असफल रहने से अपवाद भी अधिक फैला।

अपने नवजात पुत्र के संबंध में शतायु होने की उसकी घोषणा असिद्ध हुई।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 - 27 फरवरी, 2022

✦ *जो व्यक्ति ज्ञेय को जानता है, हेय को छोड़ने की साधना करता है और उपादेय को ग्रहण करता है, उसके भीतर प्रसन्नता का स्रोत प्रस्फुटित होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा महोत्सव के विविध आयोजन

१७८वाँ मर्यादा महोत्सव आयोजित

आर०सी० व्यास कॉलोनी।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी के सान्निध्य में आर०सी० व्यास कॉलोनी स्थित जयाचार्य भवन में तेरापंथ धर्मसंघ का १५८वाँ मर्यादा महोत्सव मनाया गया। शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी के महामंत्रोच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, शासनश्री ने तेरापंथ के प्रथम आचार्य भिक्षु द्वारा मर्यादा पत्र को स्थापित कर मर्यादा के महाकुंभ का मंगल आगाज किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई। बाल कलाकार हीरेन चोरड़िया, दक्ष बड़ोला ने गीतिका एवं कनिष्का रांका ने भक्तामर का शुद्ध उच्चारण प्रस्तुत किया।

ज्ञानशाला के बच्चों—अजय गोखरू, दर्शित चोरड़िया, दक्ष बड़ोला, दीप चोरड़िया, दीक्षित सेठिया, कस्वी गोखरू, वक्तव्य दुगड़, खुशी चोरड़िया, अदम्य देवड़ा, मनन दुगड़, शौर्य रांका ने तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारह आचार्यों पर आधारित मंत्रमुग्ध करने वाले शब्दचित्र की प्रस्तुति दी। शासन माता साध्वीप्रमुखाश्री पर आधारित शब्द चित्र की अक्षी रांका ने प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका ज्योति दुगड़ ने किया। ज्ञानशाला संयोजिका सुमन लोढ़ा व सह-संयोजिका संगीता चोरड़िया का सहयोग रहा।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक मर्यादित धर्मसंघ है। मर्यादा का महोत्सव सिर्फ तेरापंथ धर्मसंघ में ही मनाया जाता है। मर्यादा वो मशाल है जो जिंदगी को जगमगा देती है। आज हमें संकल्प करना है, हम गुरु इंगित की आराधना करेंगे। तेरापंथ के प्रति समर्पण भाव रखने वाला ही धर्मसंघ का सशक्त सदस्य हो सकता है। तेरापंथ धर्मसंघ में गुरु इंगित सर्वोपरि है, हमारा मूल मंत्र एक गुरु और एक विधान है। आज हम मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्य भिक्षु को नमन करते हैं।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने कहा कि जीवन में खुशियाँ स्थापित करने का नाम है—मर्यादा। अगर मर्यादा न हो तो जीवन बेकार है। मर्यादाहीन व्यक्ति बिना ब्रेक की गाड़ी की तरह है जो कभी भी कहीं भी दुर्घटना का कारण बन सकता है। मर्यादा एक लक्ष्मण रेखा है जो पार कर लेता है उसका पतन हो जाता है। और जो सीमा में रहकर जीवन पर्यन्त कार्य करता है, उसका जीवन शांतिपूर्ण निकलता है। हर चीज में मर्यादा आवश्यक है।

साध्वी गुणमाला जी की सहवर्तिनी साध्वी नव्यप्रभा जी एवं साध्वी उन्नतप्रभाजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने मर्यादा घोष का समुच्चारण करते हुए मर्यादा गीत का संगान किया।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मीना बाबेल, पूर्व अध्यक्ष चंद्रकांता चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष संदीप चोरड़िया आदि ने अपनी भावाभिव्यक्ति प्रदान की। सभी का स्वागत भिक्षु सेवा संस्थान अध्यक्ष दिनेश कांठेड़ ने एवं आभार ज्ञापन मंत्री दिलीप रांका ने किया। संघ गीत के संगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

हमारा जीवन मर्यादा से सुशोभित होता है

सोलापुर।

श्री जैन स्थानक भवन में मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम साध्वी मधुस्मिताजी एवं साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी मधुस्मिताजी के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण का संगान किया। साध्वी मधुस्मिताजी ने कहा कि मर्यादाएँ ही व्यक्ति या संघ को विकास के शिखर पर पहुँचाती हैं। मर्यादा रक्षा कवच है, बाणों से बचा सकती है। मर्यादा वह अवसाद है जो जीवन की राहों को जगमगा देती है। आकाश सूरज की किरणों से सुशोभित होता है हमारा जीवन मर्यादा से सुशोभित होता है।

साध्वी काव्यलताजी ने महामना भिक्षु की जीवनी उनके आचार-विचार तेरापंथ धर्मसंघ की मौलिक मर्यादाएँ आदि विषयों पर प्रेरणा प्रदान की। साध्वीवृंद द्वारा सामुहिक गीतिका का संगान हुआ।

साध्वीश्री सहजयशाजी ने अपने दीक्षा के २३ वर्ष पूर्ण होने पर साध्वीश्रीजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। तेयुप व महिला मंडल द्वारा सामुहिक गीतिका का संगान किया गया। सभा अध्यक्ष तिलोकचंद बोथरा व मंत्री विनोद कुमार सेठिया ने पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वागत व सम्मान किया।

मुख्य वक्ता के०के० तिवारी ने वक्तव्य दिया। बाहर से पधारे एवं उपस्थित भाई-बहनों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने नाट्य द्वारा प्रस्तुति दी।

मुख्य अतिथि कृष्णकांत तिवारी एवं डॉ० आनंद बागमार, डॉ० शैलेष पाटिल, डॉ० पांठरे व स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष पदमचंद रांका, मुर्तिपूजक संघ के मंत्री कल्पेश मालू, पश्चिम महाराष्ट्र क्षेत्रीय समिति के महामंत्री कैलाश कोठारी की विशेष उपस्थिति रही।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन डॉ० शांतिलाल सेठिया द्वारा करवाया गया। आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा के मंत्री विनोद सेठिया ने किया।

धर्मसंघ के १५८वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ को दीर्घजीवी बनाने के लिए मर्यादाओं का निरूपण किया। कार्यक्रम में विशाल उपस्थिति रही। कार्यक्रम बहुत ही सराहनीय रहा। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के मंत्री पारस कोचर ने किया। संघगान के द्वारा कार्यक्रम को संपन्न किया गया।

तेरापंथ धर्मसंघ में अनुशासन का बहुत महत्त्व है

बालोतरा।

न्यू तेरापंथ भवन में १५८वाँ मर्यादा महोत्सव उपासक श्रेणी की उपस्थिति में मनाया गया। तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान व ऊर्जावान धर्मसंघ है। इसका मूल आधार तेरापंथ धर्मसंघ की मर्यादाएँ हैं। उपासक प्रकाश वैदमुथा ने कहा कि हमारे भाग्य बड़े बलवान हैं, जो हम सबको तेरापंथ धर्मसंघ प्राप्त हुआ है। उपासक मनोज ओस्तवाल ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। उपासक सुमन कुहाड़ ने कहा कि यदि व्यक्ति को अपने जीवन का सुंदर निर्माण करना है, तो उसे मर्यादा में रहना सीखना होगा। उपासक पुष्पराज कोठारी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाने के साथ श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा कोषाध्यक्ष देवीलाल ओस्तवाल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा, अयोध्या देवी ओस्तवाल, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, ज्ञानशाला संयोजक राजेश बाफना, प्रकाश श्रीश्रीमाल आदि ने विचार व्यक्त किए।

मर्यादाएँ बंधन नहीं, बल्कि बंधन से मुक्ति देती हैं

जोधपुर।

अमरनगर के तेरापंथ भवन में आयोजित १५८वें मर्यादा महोत्सव समारोह को संबोधित करते हुए मुनि तत्त्व रुचि 'तरुण' ने कहा कि अनुशासन के लिए जीवन अपने अहंकार और ममकार का विसर्जन जरूरी है। वास्तव में अहंकार-ममकार विसर्जन का नाम ही तेरापंथ है। तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओं का निर्माण संगठन में समता, साधना एवं सुव्यवस्था के लिए किया था। मुनि संभव कुमार जी ने मर्यादाओं को संगठन का आधार बताते हुए कहा कि मर्यादा की बुनियाद पर टिका संगठन ही संघ और समाज के लिए हितकर होता है। मर्यादा और अनुशासन विकास में बाधक नहीं बल्कि साधक है। उन्होंने कहा कि मर्यादाएँ बंधन नहीं वे तो बंधन से मुक्ति दिलाने वाली होती हैं।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष माणक तातेड़, महिला मंडल अध्यक्ष सरिता कांकरिया, मंत्री चंद्रा जीरावला, तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुधा भंसाली, विजय सिंह नाहटा, वरिष्ठ श्रावक जगदीश धारीवाल आदि ने मर्यादा के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए। पूर्व सभाध्यक्ष उम्मेदमल सिंघवी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल के सामुहिक गीत के संगान से हुआ। मंत्री चंद्रा जीरावाला ने आगामी कार्यक्रम की जानकारी दी।

मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम

जीन्द।

तेरापंथ भवन में मुनि जम्बू कुमार जी के सान्निध्य में १५८वाँ मर्यादा महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के माध्यम से मुनिश्री ने किया। मंगलाचरण महिला मंडल, जीन्द की बहनों ने मर्यादा गीतिका से किया। ज्ञानशाला, जीन्द के बच्चों ने भी भजन के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी।

मुनि धवल कुमार जी ने हमारे जीवन में मर्यादा क्यों आवश्यक है तथा मर्यादा क्या है विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। मुनि जम्बू कुमार जी ने मर्यादा महोत्सव की शुरुआत क्यों की गई? इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर खजांची लाल जैन, कुणाल मित्तल आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच संचालन राजेश जैन ने किया।

विकास का सबसे बड़ा कारण है-मर्यादा

सिंधनूर।

साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'वर्तमान युग में अनुशासन की महत्ता' विषय पर प्रस्तुति के साथ मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम मनाया गया। डॉ० साध्वी गवेषणाश्रीजी ने कहा कि तेरापंथ के सौंदर्य और विकास का सबसे बड़ा कारण है—मर्यादा। अगर तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादित नहीं होता, एक आचार्य का नेतृत्व नहीं होता तो आज तेरापंथ विकास नहीं कर पाता, ऐसा कोई संप्रदाय या संघ नहीं है जहाँ मर्यादा महोत्सव मनाया जाता है।

साध्वी दक्षप्रभाजी ने अपने विचारों के साथ गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की शुरुआत सिंधनूर महिला मंडल के मंगलाचरण से हुई। स्थानीय तेयुप के अध्यक्ष विजय नाहर ने अतिथि स्वागत भाषण दिया। अभातेयुप के पूर्व महामंत्री हनुमानमल लुंकड़, तेमम की मंत्री सुनीता नाहर, गदग से समागत तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, गंगावती के उपासक सभा के मंत्री राजेंद्र कोचर, रायचूर से समागत महिला मंडल से कुसुम नाहर, स्थानीय मंदिर मार्गी के जागरूक अध्यक्ष सुजीत ओस्तवाल, गदक के समागत तेयुप के अध्यक्ष दिनेश संकलेचा ने अपने मर्यादा अनुशासन पर विचार रखे।

सिंधनूर तेरापंथ महिला मंडल, गदग महिला मंडल और तेयुप की टीम ने अपनी प्रस्तुति दी। सिंधनूर कन्या मंडल की बहनों ने सुंदर प्रस्तुति दी जिसका संचालन साध्वी मयंकप्रभाजी ने किया। स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष गौतम बम्ब ने संघ की एकता का परिचय दिया। स्थानीय सभा के मंत्री राजेंद्र नाहर ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरुप्रभाजी ने किया।

१७८वाँ मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम

सूरत।

साध्वी लब्धिश्रीजी एवं साध्वी सम्यक्प्रभाजी के सान्निध्य में १५८वें मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ नवकार मंत्र के साथ हुआ। किशोर मंडल, सूरत द्वारा तेरापंथ के इतिहास की रोचक प्रस्तुति दी गई। सुमधुर संगीतकार नीलेश बाफना द्वारा मधुर गीत का संगान प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मर्यादा महोत्सव पर रोचक कव्वाली की प्रस्तुति की गई।

तेरापंथ सभा, उधना से संजय बोथरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेमम एवं कन्या मंडल, उधना ने सामुहिक गीतिका का संगान किया। तेमम, सूरत द्वारा नाटक की प्रस्तुति की। साध्वी वर्धमानयशाजी द्वारा गीतिका का संगान किया गया। तेरापंथ किशोर मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा रोचक नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति की गई।

साध्वी हेमयशाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी सम्यक्प्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि संगठन को मजबूती देने के लिए मर्यादा अपेक्षित है। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हरीश कावड़िया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेमम अध्यक्ष राखी बैद ने अपने भाव व्यक्त किए। साध्वी लब्धिश्रीजी ने कहा कि बिना मर्यादा संघ का शरीर हड्डियों का ढाँचा है। मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम में सभी संघीय संस्थाओं, तेयुप कार्यकारिणी सदस्यों के साथ श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण के कार्यक्रम

ध्वजारोहण कार्यक्रम

पूर्वांचल-कोलकाता।

७३वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर तेयुप के सदस्यों ने तेयुप के लेकटाउन कार्यालय में ध्वजारोहण का कार्यक्रम मनाया। ध्वजारोहण के उपरांत उपस्थित सभी सदस्यों ने राष्ट्रगान का संगान किया। तेयुप अध्यक्ष विकास सिंघी ने ध्वजारोहण करने के पश्चात उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत एवं देश के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, अध्यक्ष विकास सिंघी, उपाध्यक्ष-प्रथम अमित बैद, उपाध्यक्ष-द्वितीय धर्मेन्द्र बुच्चा, मंत्री धीरज मालू सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे।

स्वतंत्रता दिवस

वाशी।

तेयुप द्वारा गणतंत्र दिवस का समारोह अणुव्रत भवन में आयोजित हुआ। सर्वप्रथम राष्ट्रगान के साथ ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ। उपस्थित महानुभावों ने अपने विचार रखे। पदम जैन ने देशभक्ति कविता की प्रस्तुति दी।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में वाशी कन्या मंडल द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी। विशेष उपस्थिति सभा अध्यक्ष सुरेश बाफना, मंत्री अशोक बड़ोला, तेयुप अध्यक्ष नितेश बाफना, उपाध्यक्ष विमल कोठारी, भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन ट्रस्ट मंत्री अमृत खाटेड़, बलवंत चोरड़िया, चेतन कोठारी, महावीर चोरड़िया, विनोद बाफना, अणुव्रत समिति, नवी मुंबई संयोजक पवन परमार, पंकज चंडालिया, प्रवीण चोरड़िया, राजू कावड़िया, महिला मंडल मंत्री अनीता चपलोत, निर्मला चंडालिया की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सफल बनाने में राहुल चोरड़िया, विमल श्रीमाल, कैलाश गुंदेचा, नीलेश चपलोत, कोषाध्यक्ष विजेंद्र मेहता आदि सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यों का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन तेयुप वाशी से उपाध्यक्ष हरीश गादिया ने किया।

झंडारोहण समारोह एवं सेवा कार्य

बेहाला।

७३वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा शांति निवासी वृद्धाश्रम में ध्वजारोहण समारोह में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। ध्वजारोहण वृद्धाश्रम के वरिष्ठ सदस्य द्वारा किया गया। तेयुप, बेहाला ने अपने सेवा कार्य के अंतर्गत वृद्धाश्रम के सदस्यों को दाल-चावल एवं अन्य उनकी जरूरत की राशन सामग्री प्रदान की।

कार्यक्रम का शुभारंभ वृद्धाश्रम की संयोजिका रीना सेन ने मंगलाचरण करते हुए तेयुप, बेहाला के सभी सदस्यों के लिए शुभाशीष व मंगलकामना हेतु प्रार्थना की।

तेयुप अध्यक्ष चेतन चौपड़ा, मंत्री अभिषेक बैंगानी, पूर्व अध्यक्ष राकेश भूतोड़िया, संगठन मंत्री राहुल मनोठ, पूर्व अध्यक्ष मोहित धारीवाल एवं सहमंत्री-द्वितीय सिद्धार्थ धारीवाल का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

अणुव्रत एवं जीवन-विज्ञान साइकिल रैली का समापन समारोह

गुवाहाटी।

अणुव्रत समिति ने अणुव्रत एवं जीवन-विज्ञान साइकिल रैली सम्मान समारोह का आयोजन स्थानीय तेरापंथ धर्मसंघ में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत के संगान एवं आचार संहिता वाचन से हुआ। तत्पश्चात सिलीगुड़ी से गोलकगंज, धुबड़ी, गौरीपुर, बिलासीपाड़ा, ग्वालपाड़ा होते हुए गुवाहाटी तक करीब ५०० कि०मी० की यात्रा चार दिनों में संपन्न करने वाले महावीर सिरोहिया, पवन अग्रवाल एवं हरीश शर्मा का गुवाहाटी पहुँचने पर तेरापंथ धर्मस्थल में तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर मंच पर समिति अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी, अणुविभा के सहमंत्री छतर सिंह चोरड़िया एवं असम राज्य प्रभारी बजरंग बैद, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष झनकार दुधोड़िया के अलावा तीनों अतिथि भी उपस्थित थे। समिति अध्यक्ष ने स्वागत भाषण में कहा कि इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य भोजन के प्रति जागरूकता फैलाना है।

इस अवसर पर साइकिल यात्रियों को अणुव्रत समिति ने फूलाम गमछा, अणुव्रत डायरी और असम का सांस्कृतिक प्रतीक चिह्न 'गैंडा' का उपहार भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। इस सम्मान समारोह में तीनों अतिथियों के परिवारिकजन सिलीगुड़ी, फरीदाबाद, कोलकाता, नगांव एवं गुवाहाटी से उपस्थित हुए, जिनका भी अणुव्रत समिति ने स्वागत किया।

कार्यक्रम में सभा मंत्री, सहमंत्री, कोषाध्यक्ष, महिला मंडल अध्यक्ष-मंत्री, तेयुप के कोषाध्यक्ष, संगठन मंत्री, टीपीएफ अध्यक्ष, मोटर पार्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष, मंत्री व कोषाध्यक्ष, मारवाड़ी सम्मेलन कामरूप शाखा के मंत्री के अलावा समाजबंधु एवं समिति के पदाधिकारी व सदस्यगण भी उपस्थित थे। आभार ज्ञापन समिति के मंत्री पवन जम्मड़ ने किया।

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

जयपुर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं जयपुर शहर द्वारा साध्वी धनश्रीजी के सान्निध्य में प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के मनोनयन स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में उनके जीवन-वृत्त पर आधारित नाटक व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन अणुविभा केंद्र में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी ने नवकार मंत्र के साथ किया। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुति दी।

अध्यक्ष निर्मला सुराणा ने सभी का स्वागत व अभिनंदन किया। भाषण प्रतियोगिता की जज पल्लवी सिंघवी तथा लीला डोसी रही। ८ प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। प्रथम प्रीति घीया, द्वितीय नेहा नागौरी, बबीता जैन एवं तृतीय बीना लुनिया, नेहा कांवड़िया रही।

नाटक 'वैराग्य भावना की गाथा' प्रस्तुत किया गया, जिसमें प्रतिभागी उषा बरड़िया, चंचल दुगड़, राजरानी जैन, नेहा कावड़िया, दीप्ति धांधिया, प्रज्ञा और पूर्वा बांठिया रहे। कार्यक्रम का संचालन उषा बरड़िया ने किया। साध्वीश्री जी ने असाधारण व्यक्तित्व की धनी प्रमुखाश्रीजी के जीवन पर अपना उद्‌बोधन दिया। सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। मंत्री पायल बैद ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

करनी है जीवन की रक्षा-कन्याओं की करो सुरक्षा

जसोल।

कन्या सुरक्षा सर्किल के अंतर्गत अभातेममं के निर्देशन में शाखा मंडल तेममं, जसोल के तत्त्वावधान में एवं मंडल अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में राजकीय आयुर्वेदिक हॉस्पिटल में एक कार्यक्रम आयोजित हुआ।

इस कार्यक्रम में जसोल सरपंच ईश्वरसिंह चौहान, पूर्व सरपंच भंवरलाल भंसाली, वार्ड पंच महेंद्र गांधी मेहता, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष प्रवीण भंसाली, तरुण भंसाली, डॉ० सिम्मी जैन, कंपाउंडर रामकिशोर शर्मा, तेममं के अध्यक्ष सोहनी देवी सालेवा आदि अनेक पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। अतिथियों की उपस्थिति में आयुर्वेदिक हॉस्पिटल में महिला मंडल, जसोल द्वारा बेंच भेंट की गई। कार्यक्रम के अंत में डॉ० सिम्मी जैन ने तेममं का आभार ज्ञापित किया।

टीपीएफ के विविध आयोजन

संगठन यात्रा

जीन्द।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारीख, राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत, सहमंत्री स्वीटी जैन जीन्द आए। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक रूप से नमस्कार महामंत्र के माध्यम से हुआ। टीपीएफ, जीन्द के अध्यक्ष डॉ० अनिल जैन ने स्वागत भाषण के माध्यम से अपने विचार प्रकट किए। जीन्द सभा अध्यक्ष खजांचीलाल जैन, महिला मंडल अध्यक्षा उपासिका कांता मित्तल, डॉ० सुरेश जैन आदि ने भी टीपीएफ के बेहतरीन आयामों के विषय में अपने विचार व्यक्त किए।

राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत ने टीपीएफ के विभिन्न आयामों पर विस्तार से प्रकाश डाला। राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारीख ने टीपीएफ की स्थापना क्यों, कैसे, किस कारण से हुई, इस विषय पर विस्तार से चर्चा की।

इस अवसर पर जीन्द से डॉ० सुरेश जैन टीपीएफ के फैलो मेंबर बनें। आभार ज्ञापन टीपीएफ, जीन्द के मंत्री संजीव रोहिल्या ने किया। टीपीएफ के सभी मेंबर को बैज लगाकर राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सम्मानित किया। संचालन तेयुप, जीन्द के संरक्षक राजेश जैन ने किया।

कैरियर कॉउंसलिंग कार्यक्रम

साउथ हावड़ा।

टीपीएफ, साउथ हावड़ा एवं नार्थ हावड़ा द्वारा क्लास ८ से १२ के विद्यार्थियों के लिए कैरियर कॉउंसलिंग का कार्यक्रम साउथ हावड़ा सभा भवन में साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र तथा प्रेरणा पाथेय से हुई। मनोज सेठिया, अध्यक्ष साउथ हावड़ा ने अपने स्वागत वक्तव्य में टीपीएफ की गतिविधियों के बारे में बताया। निवर्तमान महामंत्री सुशील जैन ने अध्यात्म के बारे में बताया। साउथ हावड़ा महिला मंडल की अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया, टीपीएफ पूर्वांचल अध्यक्ष प्रवीण सुराणा की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में ६० बच्चों ने भाग लिया।

मुख्य वक्ता गौतम दुगड़ एवं लोकेश लखोटिया ने स्टूडेंट्स को कैरियर के बारे में विभिन्न सुझाव दिए। नार्थ हावड़ा अध्यक्ष ने स्टूडेंट्स को जीवन-विज्ञान के प्रयोग करवाए। टीपीएफ, साउथ हावड़ा मंत्री निकिता मुणोत, टीपीएफ नार्थ हावड़ा के मंत्री रितेश दुगड़, टीपीएफ, साउथ हावड़ा के पूर्व अध्यक्ष बीरेंद्र सेठिया, साउथ एवं नार्थ हावड़ा के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन विनीत झाबक ने किया। धन्यवाद ज्ञापन नार्थ हावड़ा अध्यक्ष ने किया।

संथारा प्रत्याख्यान की अनुमोदना

साउथ कोलकाता।

भीमराज डागा, सुपुत्र स्वर्गीय तोलाराम डागा, उम्र लगभग ८६ वर्ष ने यावज्जीवन तिविहार संथारा का प्रत्याख्यान पूर्ण स्वस्थ व शांत मन के साथ अपनी दृढ़-संकल्प शक्ति से जीवन के मूल सिद्धांत 'आत्मा भिन्न-शरीर भिन्न' को आत्मसात करते हुए पूर्ण जागृत अवस्था में अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने का संकल्प किया।

टीपीएफ एवं तेयुप, साउथ कोलकाता ने तेरापंथ समाज के आद्यप्रवर्तक महामना भिक्षु की तेरस को उनके आवास जाकर इस महान तप की अनुमोदना कर भक्ति व तप के गीतों के माध्यम से वातावरण भिक्षुमय बना दिया।

फोरम के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा ने वक्तव्य में कहा कि भीमराज डागा के भावों की उत्तरोत्तर वृद्धि हो, आप आत्म-कल्याण के मार्ग पर सुखसातापूर्वक आगे बढ़ें। आपका संथारा सुखपूर्वक अपने गंतव्य पर पहुँचे, ऐसी हमारी मंगलकामना। फोरम के मंत्री प्रवीण कुमार सिरोहिया, सदस्य रोहित दुगड़ ने अपने भजनों की प्रस्तुति दी। टीपीएफ परिवार की तरफ से पूरे डागा पिरवार को साधुवाद।

✦ *यदि दुनिया में धोखा न हो तो दुनिया बहुत अच्छी बन सकती है। ईमानदारी के प्रति सघन आस्था हो तो अनेकानेक समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

पच्चीस बोल कार्यशाला का आयोजन

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप के त्रिआयामी सेवा-संस्कार-संगठन जिसमें संस्कार के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल साउथ हावड़ा द्वारा आचार्य भारमल जी स्वामी के द्विशताब्दि महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य पर पच्चीस बोल कार्यशाला के आयोजन साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में किशोर मंडल द्वारा किया गया। जिसमें वहाँ उपस्थित सभी ने इस कार्यशाला का लाभ लिया।

इस कार्यशाला में हमारे जैन धर्म में जो २५ बोल हैं, उसके बारे में बताया गया। इस कार्यक्रम में तेयुप सहित किशोर मंडल की भी अच्छी उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु संयोजक संजोग कुमार पारख, सह-संयोजक अभिषेक चोरड़िया सहित पीयूष दुगड़, आशीष बैद, मिथिलेश बैद का आभार व्यक्त किया। साध्वी स्वर्णरेखाजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित जिन्होंने किशोर मंडल को कार्यक्रम करने हेतु प्रेरणा दी।

अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

एटीडीसी पूर्वांचल के लिए यह गौरव का विषय है कि डॉ० धीरज मरोठी जैसे चिकित्सक हमसे जुड़े हुए हैं। डॉ० धीरज मरोठी की देखरोख में एक बार फिर अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी, पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल १७ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

तेयुप ने डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रेषित किया।

रक्तदान शिविर

इचलकरंजी।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जन्म जयंती के अवसर पर तेयुप द्वारा अभातेयुप प्रस्तुत मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शहर के दाते मला स्थित रोटरी क्लब परिसर में आयोजित इस शिविर में कुल ५५ रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। एमएसआई ब्लड बैंक, मिरज की वैद्यकीय टीम ने इस रक्तदान शिविर में अपनी सेवाएँ दी।

तेयुप अध्यक्ष मुकेश भंसाली ने बताया कि इस शिविर के आयोजन में संयोजक महेश पटावरी व सह-संयोजक मुदित बालड़ सहित संपूर्ण तेयुप व किशोर मंडल टीम ने अच्छा श्रम नियोजित किया।

स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष महावीर आंचलिया, अभातेयुप सदस्य संजय वैद मेहता, तेरापंथ महिला मंडल निवर्तमान अध्यक्ष सीमा डागा सहित स्थानीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं समाज के सदस्यों ने इस शिविर में शिरकत की।

शिविर को सफल बनाने में तेयुप, स्थानीय तेरापंथ सभा, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल आदि सभी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

रक्तदान शिविरों का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप एवं कर्नाटक सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में तेयुप, विजयनगर द्वारा डिस्ट्रिक्ट हेल्थ एवं फेमिली वेलफेयर डिपार्टमेंट एवं कर्नाटक एड्स प्रिवेंशन सोसायटी कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित ब्लड ऑन व्हील्स रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक रोशनलाल-दिनेश कुमार-राकेश कुमार-अरविंद पोखरणा परिवार-चिताम्बा बैंगलोर का सहयोग मिला।

कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने उपस्थित होकर सभी रक्तदाताओं को प्रोत्साहित किया। साथ ही परिषद के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि विजयनगर परिषद संपूर्ण टीम अभातेयुप निर्देशित हर आयाम में सराहनीय कार्य कर रही है, आगे भी इसी गति से कार्य करने की प्रेरणा दी।

अध्यक्ष अमित दक ने महामंत्री पवन मांडोत को आश्वस्त किया कि तेयुप, विजयनगर अभातेयुप निर्देशित हर कार्य को करने के लिए सदैव तत्पर है। इस अवसर पर मंत्री विकास बांठिया, एमबीडीडी संयोजक महेंद्र सेठिया, सह-संयोजक विनीत गांधी, कार्यकारिणी सदस्य दिनेश मेहता, विक्रम बोहरा एवं जिग्नेश मेहता उपस्थित थे। अभी तक ६८ दिनों में १५३ कैंपों के द्वारा कुल ३७८१ यूनिट रक्तदान हुआ।

फ्री लिपिड प्रोफाइल कैंप का आयोजन

यशवंतपुर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, बैंगलोर द्वारा संचालित अचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, यशवंतपुर द्वारा फ्री लिपिड प्रोफाइल (कोलेस्ट्रोल टेस्ट) कैंप का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्रोच्चार द्वारा हुआ। एटीडीसी संयोजक दीपक बाबेल ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा विभिन्न सेवा कैंप आयोजित किए जा रहे हैं। कैंप में लाभार्थियों का लिक्विड प्रोफाइल टेस्ट किया, जिसके अंतर्गत टोटल कोलेस्ट्रॉल, ट्रीग्लिसरिड्स, एचडीएल कोलेस्ट्रॉल, एलडीएल कोलेस्ट्रॉल, वीएलडीएल कोलेस्ट्रोल की जानकारी व लेवल रेश्यो लाभार्थियों को दी जाएगी। सह-संयोजक जितेंद्र पितलिया ने रजिस्ट्रेशन की व्यवस्था के साथ-साथ कैंप के आयोजन में विशेष सहयोग प्रदान किया।

तेयुप अध्यक्ष विनय बैद ने कार्यक्रम की व्यवस्था की सराहना की। निवर्तमान अध्यक्ष विनोद मूथा, सहमंत्री विवेक मरोठी व एटीडीसी प्रभारी रजत बैद का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। कुल ४१ लाभार्थियों द्वारा कैंप का लाभ लिया। सभी का आभार परिषद मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

बारडोली।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा त्रिदिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, क्षेत्रीय प्रभारी सुनील चंडालिया, एमबीडीडी के राष्ट्रीय प्रभारी सौरभ पटावरी की विशेष उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर के संयोजक, सह-संयोजक के रूप में साकेत मेहता, मनीष कोठारी, राहुल कोठारी, दिलखुश बाफना, संजय बड़ोला, विकास पितलिया ने विशेष श्रम का परिचय दिया।

सरदार स्मारक अस्पताल के रक्तदान प्रभारी राजुभाई एवं उनकी टीम का विशेष सहयोग रहा। तेयुप के अध्यक्ष साहिल बाफना एवं मंत्री रौनक सरणोत ने सभी के प्रति साधुवाद ज्ञापन किया।

निवर्तमान अध्यक्ष महावीर दक, परामर्शक राजेश चोरड़िया, पूर्व अध्यक्ष पंकज बड़ोला, पीयूष बाफना, संजय बड़ोला, चिराग देरासरिया, मुदित मेहता, राहुल मेहता, केनिल बाफना, पंकज दक, नरेश दक, नवीन मेहता, सुशील सरणोत, राहुल सामरा की उपस्थिति रही।

दो दिवसीय रक्तदान शिविर के अंगर्तत लगभग १०८ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। सभी रक्त दानदाता सदस्यों को स्मृति भेंट प्रदान किए गए एवं आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ प्रेषित की गई।

✦ *जहाँ तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

प्रभु महाश्रमण तुम मेरे अंतर के राम हो

● **साध्वी प्रबुद्धयशा** ●

आचार्यवर–कियां है?

जिनप्रभाजी–ड्रीप, इंजेक्शन आदि लिया और अब उनकी मूर्च्छा टूटी है वे बैठी भी हुई हैं और बोल भी रही है।

आचार्यवर–(आश्चर्य के साथ) अच्छा। बैठी भी है और बोल भी रही है तब तो हम भी एक बार वहाँ आते हैं। उनको बता देते हैं।

साध्वीश्रीजी–गुरुदेव दिन कम हैं।

आचार्यवर–नहीं, नहीं एक बार आ जाते हैं।

गुरुदेव तत्काल पधारे। दर्शन दिराए। उनसे बात की।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी–देखो, चंद्रिकाश्रीजी! आज गुरुदेव तीन बार पधार गया। कित्ती कृपा करवाई है।

चंद्रिकाश्रीजी–(बार-बार) गुरुदेव भयंकर (बहुत ज्यादा) कृपा करवाई। गुरुदेव बहुत कृपा करवाई।

आचार्यवर–(मुस्कान के साथ) कृपा की कोई बात कोनी। बस थे ठीक हू ज्यावो। ठीक हू ज्यावो।

वहाँ उपस्थित साधु-साध्वियाँ भाव-विभोर हो रहे थे।

एक ही लक्ष्य

१३ नवंबर। जयपुर रवाना होने से पूर्व आचार्यवर ने सेवा करवाई। हम साध्वियों को कहा–जयपुर भेज रहे हैं। तुम्हारा एक ही लक्ष्य हो–इसको ठीक करना है। पूरा ध्यान रखना है। पूरी जागरूकता से सेवा हो। यह प्रयास रखना ये चलने लग जाएँ।

साध्वियाँ–गुरुदेव की शक्ति से ये लक्ष्य पूरा हो। चंद्रिकाश्रीजी ठीक हो जाएँ।

स्वागत ही नहीं सामने आना–१३ नवंबर

साध्वीप्रमुखाश्रीजी–बोलो चंद्रिकाश्रीजी! गुरुदेव ने निवेदन करो।

चंद्रिकाश्रीजी–गुरुदेव! म्हारी जल्दी संभाल लिज्यो।

जयपुर जल्दी पधारज्यो।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी–थै जयपुर में गुरुदेव को स्वागत करीज्यो।

चंद्रिकाश्रीजी–तहत महाराज।

आचार्यवर–स्वागत ही नहीं, चालकर सामनै आइज्यो। सत्यां सामने पेय ले'र आवै है नी। थे भी बियां ही आइज्यो, साध्वीप्रमुखाश्रीजी पधारै बी टाईम सामने जाइज्यो।

गुरुवचन उनके भीतर शक्ति का संचार कर रहे थे।

म्हानै अच्छा सतियाँ लग्या

कुछ देर ठहरकर आचार्यवर ने बड़ी प्रसन्नता के साथ फरमाया–ए अच्छा सतियाँ हैं, अच्छा सतियाँ हैं, अच्छा सतियाँ लाग्या म्हानै। कामकाज करणियाँ हैं।

सभी–तहत्

चंद्रिकाश्रीजी–गुरुदेव बहुत कृपा कराई। म्हारै ऊपर आपरो अनंत उपकार है।

भीलवाड़ा प्रवास के दौरान धीरे-धीरे साध्वी चंद्रिकाश्रीजी की शारीरिक स्थिति तो जरूर कमजोर हो रही थी, लेकिन उनका मनोबल, आत्मबल, धृतिबल, आंतरिक आनंद, समता और समाधि अप्रत्याशित रूप से बढ़ रही थी। इसका मुख्य कारण था उनकी आचार्य भिक्षु पर अटूट श्रद्धा, परमाराध्य आचार्यप्रवर की अनंत कृपा एवं श्रद्धेया मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्रीजी का असीम वात्सल्य। संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ केवल परिचित ही नहीं, अनुभूत है। श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्रीजी के स्नेह-भाव का।

(क्रमशः)

आगम को मित्र बनाकर आत्मसात करें : आचार्यश्री महाश्रमण

बीदासर, ११ फरवरी, २०२२

शासन सम्राट आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ३२ आगमों में एक आगम है—दसवेंआलियं। यह आगम चारित्रात्माओं के लिए बहुत उपयोगी है। नवदीक्षित इसे कंठस्थ करने का प्रयास करते हैं। आवश्यक सूत्र के सिवाय आगमों में सबसे ज्यादा कंठस्थ किया जाने वाला यह आगम है। तीसरा स्थान उत्तराध्ययन आगम का होता है।

दसवेंआलियं में दस अध्ययन हैं। पाँचवें अध्ययन में गोचरी के विषय में विधि-विधान के बारे में बताया गया है। भाषा के संदर्भ में क्या बोलना, क्या न बोलना इसके सातवें अध्ययन में सुंदर दिशा निर्देश प्राप्त होते हैं। षड़-जीविकाय के बारे में और महाव्रतों के बारे में चौथे अध्ययन में सुंदर जानकारी मिलती है। छेदोपस्थापनीय चारित्र जो पचक्खाया जाता है, वो इसके चौथे अध्ययन में सूत्रों के आधार पर ग्रहण कराया जाता है।

कैसे आगे से आगे विकास होता है, उसकी सुंदर जानकारी मिलती है। सुगति-दुर्गति की जानकारी मिलती है। सुलभ किसके लिए, दुर्लभ किसके लिए सुगति हो जाती है, इसका भी निर्देश चौथे अध्ययन में मिलता है। माधुकरी भिक्षा के बारे में पहले अध्ययन में थोड़े से श्लोकों में दे दी है।

दसवेंआलियं के पहले अध्ययन का पहला श्लोक है, वो तो मानो धर्म का सार है। अहिंसा, संयम, तप धर्म है। नौवें अध्ययन में विनय के संदर्भ में वर्णन प्राप्त होता है। दसवें अध्ययन में भिक्षु और उसके लक्षणों का वर्णन मिलता है। कभी साधु का मन अस्थिर हो जाए, तो क्या करना? इसका वर्णन इसकी पहली चूलिका में सुंदर भविष्य के लिए चेतावनी दी गई है।

दूसरी चूलिका में प्रेक्षाध्यान का आधार अति संक्षेप में इसमें बताया गया है। यों हम चारित्रात्माओं व समण श्रेणी के लिए स्थिति के अनुसार यह दसवेंआलियं बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसका स्वाध्याय करने का प्रयास करना चाहिए। अर्थ का भी ज्ञान हो तो प्रेरणा मिल सकती है। निर्जरा की स्थिति बन सकती है। ज्ञान भी अच्छा रह सकता है।

प्रतिक्रमण का अर्थ हमारे समझ में आए तो बहुत अच्छा रह सकता है। उत्तराध्ययन आगम भी पूरा कंठस्थ हो तो अच्छी बात है। इसका दसवां और उन्तीसवाँ अध्ययन याद कर ले। ये स्वाध्याय, वैराग्य भाव की निर्मलता के लिए अच्छा है। इसे कंठस्थ करने का प्रयास करें। संयम रूपी शरीर के आगम भोजन के समान है। दुनिया में मित्र बनाए जाते हैं, आगम हमारा ऐसा मित्र बन जाए, आत्मसात् हो जाए। हमेशा हमारे साथ पास रहे।

आज माघ शुक्ला दशमी है। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का आज दीक्षा दिवस होता है। आज के दिन हमारे धर्मसंघ को एक ऐसा बालमुनि प्राप्त हुआ था। सरदारशहर के भंसालियों के बाग में पूज्य कालूगणी के करकमलों से दीक्षा हुई थी। वे हमारे धर्मसंघ के आचार्य बने। वे अद्वितीय-विलक्षण आचार्य थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ का एक बहुत बड़ा अवदान है—आगमों का संपादन, अनुवादन, टिप्पण लेखन। आज हम कई आगम सुविधा से प्राप्त कर रहे हैं, उनमें आचार्य महाप्रज्ञजी का विशेष योगदान रहा है। मैं आगम संपादन के कार्य को एक राज्य मानूँ तो आचार्य तुलसी आगम वाङ्मय के राष्ट्रपति थे। आचार्य महाप्रज्ञ जी उसके प्रधानमंत्री थे। आचार्य महाप्रज्ञजी का आगम संपादन में एक सेवादान है।

गुरुदेव महाप्रज्ञजी की संस्कृत भाषा पर अच्छी कमांड थी। आशु कविता भी कर लेते थे। प्रेक्षाध्यान को खड़ा करने में उनका कितना बड़ा योगदान है। जीवन-विज्ञान भी उनका अवदान है। प्रवचन भी करते थे। प्रवचन में उनकी भाषा बड़ी शुद्ध-स्पष्ट होती थी। उनका वैदुष्य भी था। साहित्यकार भी थे। महाप्रज्ञ वाङ्मय में १०० से अधिक पुस्तकें आ गई हैं। उनका विपुल साहित्य है।

हमारे इस भैक्षव शासन की बगिया में एक विशिष्ट आचार्य हमारे धर्मसंघ को प्राप्त हुए। उनके उपपात-चरणों में रहने का मौका मुझे मिला। मुझे कार्य करने का कितना बड़ा मैदान दिया। उनका विशेष वात्सल्य मुझे प्राप्त हुआ था। युगप्रधान आचार्य के रूप में वे प्रस्तुत हुए। हमारे भी विकास होता रहे। हम भी उनके बताए मार्ग में विकास करने का प्रयास करते रहें। मैं गुरुदेव के प्रति श्रद्धा भाव से अपनी प्रणति अर्पित करता हूँ।

पूज्यप्रवर के प्रति अभिवंदना के स्वर में चेतन, सरोज दुगड़, पुष्पा सुराणा, सुरेंद्र सेखाणी, पारस गोलछा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि पूज्य महाप्रज्ञजी के जीवन के सार रूप में हम आचार्यश्री महाश्रमण जी को देख सकते हैं।

मायानगरी में प्रथम वीतराग पथ कार्यशाला का भव्य आगाज

कोलीवाड़ा, मुंबई।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेयुप, सायन कोलीवाड़ा द्वारा प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। अभातेयुप के आयाम वीतराग पथ की प्रथम कार्यशाला के आयोजन का सौभाग्य सायन कोलीवाड़ा परिषद को प्राप्त हुआ, जिसकी अध्यक्षता अभातेयुप के उपाध्यक्ष जयेश मेहता द्वारा की गई, साथ में उपस्थित थे सहमंत्री भूपेश कोठारी। जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों, युवाओं, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता के साथ, जीवन जीने की दिशा को समझने हेतु एक सफल मार्गदर्शन प्राप्त किया। माया नगरी मुंबई में भौतिकता की चकाचौंध में डूबे लोगों को अध्यात्म के शिखर मार्ग वीतराग पथ की ओर बढ़ने के भावों को प्रस्तुत करने वाला यह विशेष कार्यक्रम, निरंतर चार घंटे तक तल्लीनता के साथ चला। जिसमें तेयुप सायन कोलीवाड़ा के सभी सदस्यों ने समय का उचित नियोजन करते हुए कार्यशाला को भव्य स्वरूप में आयोजित किया। जिसमें मुंबई सहित कई राज्यों के गणमान्य व्यक्तियों ने विशेष उपस्थिति दर्ज करवाई।

सर्वप्रथम मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के संगान से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण चेंबूर के ज्ञानार्थियों ने किया। विजय गीत का संगान सागर सामर द्वारा किया गया। स्वागत वक्तव्य तेयुप सायन कोलीवाड़ा के अध्यक्ष सुनील कोठारी ने किया।

वीतराग पथ की कार्यशाला का संचालन राष्ट्रीय प्रभारी तरीन मेहता ने किया। सिद्ध मुनि ने एक कहानी के माध्यम से सभी बच्चों को वीतराग के बारे में समझाया।

'सुख क्या है' विषय पर एक शॉर्ट वीडियो क्लिक दिखाई गई। मुनि जागृत जी ने इस वीतराग पथ की कार्यशाला के लिए मंगलभावना प्रेषित की। डॉ० मुनि अभिजीत जी ने अपने अनुभव को सभी के साथ शेयर किया कि किस तरह उनके मन में वैराग्य की भावना जागृत हुई। मुनि अजीत स्वामी ने एक गीतिका का संगान किया। जम्बू स्वामी ने सभी को सामायिक करने की प्रतीज्ञा लेने के लिए कहा।

आगम मनीषी मुनि महेंद्र कुमार जी ने वीतराग पथ पर विशेष उद्बोधन प्रेरणा पाथेय प्रदान किया और वर्ष २०२३ में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुंबई चातुर्मास के संबंध में इस कार्यशाला के माध्यम से विशेष उपहार की तैयारी करने हेतु इंगित प्रदान किया।

अनुमोदना सत्र के दौरान चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदन तातेड़ ने कार्यशाला के लिए मंगलभावना प्रेषित की। अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने अपना वक्तव्य देते हुए कार्यशाला के बारे में अपने विचार व्यक्त किए तथा मुनिवृंद से उनके संयम जीवन को लेकर साक्षात्कार के रूप में प्रश्न किए जिसके मुनिवृंद द्वारा प्रेरणादायक उत्तर प्रदान किए। जिससे श्रोताओं को कई महत्त्वपूर्ण व प्रेरणादायक जानकारियाँ प्राप्त हुई। अभातेयुप के सहमंत्री भूपेश कोठारी ने भी कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त किए तथा अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा प्रेषित उनके मन की भावना को सभी के समक्ष रखा। युवा गौरव बी०सी० भालावत ने अभातेयुप के वीतराग पथ आयाम को जन-जन तक पहुँचाने की बात रखी। मुंबई सभा अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए और गीतिका प्रस्तुत की। ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका सुमन चपलोत ने इस कार्यशाला को सफल बनाने हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए, अपना वक्तव्य दिया और कार्यशाला के अनुभव साझा किए। आभार ज्ञापन तेयुप, सायन कोलीवाड़ा के मंत्री शैलेश दुगड़ ने किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, सहमंत्री भूपेश कोठारी, महासभा उपाध्यक्ष अशोक तातेड़, वीतराग राष्ट्रीय प्रभारी तरीन मेहता ने संचालन किया। राष्ट्रीय सह-प्रभारी रूपम पटवा, शाखा प्रभारी मयंक धाकड़, अभातेयुप, मुंबई टीम, महिला मंडल अध्यक्षा रचना हिरण, अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्ष कंचन सोनी, ज्ञानशाला से शीतल सांखला, महिला मंडल, तेयुप की पूरी टीम, श्रावक समाज के साथ मुंबई के सभी गणमान्य पदाधिकारियों एवं ज्ञानार्थियों सहित कुल ४५० से अधिक की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 - 27 फरवरी, 2022

✦ *तात्त्विक ज्ञान देना, किसी को चित्तसमाधि पहुँचाना, यह भी सेवा का ही कार्य है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

वृहद मर्यादा महोत्सव : चित्रमय झलकियाँ

'समाज भूषण' अलंकरण से अलंकृत व्यक्तित्व

जेसराज सेखानी

बीदासर निवासी प्रख्यात समाजसेवी तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास को संरक्षित करने में अग्रणी भूमिका निभाने वाली 'अमृतवाणी' के संस्थापक तेरापंथ समाज के श्रावक कार्यकर्ता, उदारमना, सेवा के पर्याय जेसराज सेखानी की उल्लेखनीय समाज सेवाओं का अंकन करते हुए जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा ने धर्मसंघ के सर्वोच्च अलंकरण 'समाज भूषण' से अलंकृत किया। विक्रम संवत् १९८१ बीदासर में माता पारा देवी एवं पिता नेमचंदजी के प्रांगण में इनका जन्म हुआ। बचपन से ही जेसराज सेखानी धर्मसंघ में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। जन्मभूमि बीदासर से विशिष्ट लगाव रखने वाले जेसराज ने अपनी कर्मभूमि सूरत और कोलकाता को बनाया एवं दोनों जगत पर धार्मिक संस्थाओं से आंतरिक जुड़ाव बनाए रखा। अपने आतिथ्य, वात्सल्य और अपनत्व के लिए मशहूर जेसराज सेखानी तेरापंथ धर्मसंघ के चार आचार्यों को देख चुके हैं। वर्षों से तेरापंथ धर्मसंघ के संघीय आयोजनों में अपनी सेवामय उपस्थिति प्रदान करने के अलावा अमृतवाणी के माध्यम से शासन के इतिहास को सुरक्षित करने का जो कार्य किया है वह अपने आपमें संघ की विशिष्ट प्रभावना है। इसके माध्यम से आपने आचार्यों की वाणी एवं प्रवचन को संरक्षित किया है, जिससे भावी पीढ़ी लाभान्वित हो रही है। आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञजी के अंतरंग सहयोगी रह चुके जेसराज सेखानी वर्तमान अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति भी विशिष्ट श्रद्धा का भाव रखते हैं।

स्व० कन्हैयालाल छाजेड़

आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष सुरेश कुमार गोयल ने डूंगरगढ़ निवासी, दिल्ली प्रवासी स्व० कन्हैयालाल छाजेड़ को 'समाज भूषण' से अलंकृत कर, उनके परिवार को प्रदान किया गया। गौरतलब है कि कन्हैयालाल छाजेड़ ने धर्मसंघ की अनेक केंद्रीय संस्थाओं को अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं। जीवन के अंतिम समय तक तेरापंथ विकास परिषद के संयोजकीय दायित्व का निर्वहन कर रहे थे। वर्ष १९७६-७९ में आपने अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्षीय दायित्व का निर्वहन किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा 'युवक रत्न', आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा 'शासन सेवी' अलंकरण, भारत जैन महामंडल द्वारा 'जैन समाज रत्न' सहित अन्य अलंकरण आपश्री को प्राप्त हैं। कन्हैयालाल छाजेड़ पर आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ और आचार्यश्री महाश्रमण जी का वरदहस्त रहा है और धर्मसंघ के अनेक अंतरंग कार्यों में भी आप सहयोगी बने हैं। ८५ वर्ष की अवस्था तक धर्मसंघ को अहर्निश सेवाएँ प्रदान करने वाले व्यक्तित्व को समाज भूषण अलंकरण मिलना सचमुच में गौरव की बात है।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष

मनसुखलाल सेठिया

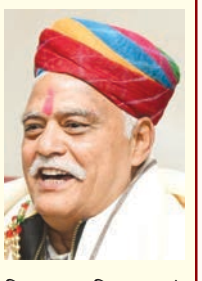

छोटी खाटू राजस्थान निवासी भुवनेश्वर प्रवासी मनसुखलाल सेठिया को जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। आपका जन्म ६ अक्टूबर, १९५९ को हुआ। आपके माता-पिता का नाम स्व० कमलादेवी सेठिया एवं स्व० कुशलचंद सेठिया है। ग्वालियर में शिक्षा प्राप्त करते हुए आपने बी०कॉम० स्नातक किया। वर्तमान में स्वाति मार्बल इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड भुवनेश्वर में व्यवसायरत हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ की संघीय संस्थाओं में तेरापंथ युवक परिषद, ग्वालियर एवं तेरापंथ युवक परिषद, कटक के अध्यक्ष के रूप में, तेरापंथ सभा, भुवनेश्वर के मंत्री और अध्यक्ष के रूप में सेवाएँ दे चुके हैं। राष्ट्रीय स्तर पर अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य, चार कार्यकाल तक अमृत सांसद, महासभा कार्यकारिणी सदस्य, महासभा न्यासी के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं।

सामाजिक संस्थाओं में संचार मंत्रालय द्वारा उड़ीसा में टेलीफोन सलाहकार समिति में सदस्य के रूप में, मारवाड़ी युवा मंच भुवनेश्वर के अध्यक्ष, मारवाड़ी सोसायटी भुवनेश्वर के उपाध्यक्ष एवं उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन उपाध्यक्ष और उड़ीसा मार्बल एवं टाइल्स ट्रेड एसोसिएशन के विगत १८ वर्षों से आप अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इनके अलावा उड़ीसा में प्राकृतिक एवं अन्य आपदाओं में उत्कल विपन्न सहायता समिति में विभिन्न दायित्व का निर्वहन कर चुके हैं। वन बंधु परिषद में वर्तमान में प्रांतीय संरक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव रखने वाले मनसुखलाल सेठिया ५२ वर्षों से स्वयंसेवक एवं विगत १५ वर्षों से अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में सहभागिता के अलावा वर्तमान में प्रांत व्यवस्था प्रमुख का दायित्व संभाल रहे हैं।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के बीदासर में ६ फरवरी, २०२२ को आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन दृष्टि मिलने पर आपको राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**